बाल कवितावली

बाल कविताावली

[छोटे बच्चों के लिए मजेदार कविताएँ]

लेखक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

'दीदी' कार्यालय

इलाहाबाद

द्वितीय बार } १९५१ { मूल्य १।।)

निवेदन

यह पुस्तक मैंने सन् १९२५ ई० में अपने प्रिय मित्र श्री सत्यवान शर्मा, सम्पादक शिशु की प्रेरणा से लिखी थी और उन्होंने इसे शिशु कार्यालय से प्रकाशित किया था। उस समय हिन्दी में बाल साहित्य कम ही था। अतएव यह बच्चों की सवश्रेष्ठ कविता-पुस्तक मानी गई थी। अब मैं इसके लिए कोई ऐसा दावा नहीं करता तथापि यह पुस्तक मुझे प्रिय है, अतएव आज लगभग २५ वर्ष बाद इसे पुनः प्रकाशित कर रहा हूं।

दीदी कार्यालय
१—३—५१

श्रीनाथसिंह

विषय-सूची

बाल विनय

हे भगवान ! हे भगवान !
हम हैं बालक और अजान ॥
करें तुम्हारा क्या गुणगान ?
माँगें तुमसे क्या वरदान ?

नहीं जानते कुछ भी नाथ !
केवल तुम्हें झुकाते माथ ॥
खड़े हुए हैं जोड़े हाथ ।
आओ, क्षण भर खेलो साथ ॥

उषा काल

चिड़ियाँ बोलीं, हिलीं लताएँ ।
लगीं झूमने तरु-शाखाएँ ॥
पूर्व दिशा में रहे न तारे ।
आँखें खोलो बोलो प्यारे ।
लगीं चटखने चटचट कलियाँ ॥
मह-मह महक रही हैं गलियाँ ॥

दुहते हैं ग्वाले गण गायें ।
बहती हैं स्वर्गीय हवायें ॥
आँखों पर आई अलसानी ।
थकी हुई है निद्रा रानी ॥
रात तुम्हारी कर रखवाली ।
जागो, अब है जानेवाली ॥
चन्दा की मुसकान निराली ।
तारों भरी गगन की थाली ॥
बाग बगीचों में आ बिखरी ।
फूलों की क्या रंगत निखरी !
माँग रही भर उषा निराली ।
पूरब में फैली है लाली ॥
अब न रहा है बहुत अँधेरा ।
उठो आ गया पुनः सबेरा ॥

सबेरा

हुआ सबेरा आँखें खोलो ।
बुला रही हैं चिड़ियाँ बोलो ॥
कहता है पिंजड़े से तोता ।
अरे, कौन है अब तक सोता ?

उठ मेरे नैनों के तारे।
सब के प्यारे राजदुलारे॥
आँगन में कौवे आये हैं।
लख तो तुझको क्या लाये हैं॥

कैसी सुन्दर घास हरी है।
उसमें कैसी ओस भरी है॥
मानों हरी बिछी हो धोती।
सिले सैकड़ों जिसमें मोती॥

तालावों में कमल गये खिल।
रहे हवा के झोंकों से हिल॥
भौंरे उन पर घूम रहे हैं।
झूम झूम मुख चूम रहे हैं॥

जगीं मछलियाँ जल के भीतर।
बगुले बैठे ध्यान लगा कर॥
घर से चले नहानेवाले।
जगे पुजारी खुले शिवाले॥

घाम सुनहली छत पर छायी।
बाबा जी ने शङ्ख बजायी॥
फूल तोड़ कर लाया माली।
गाय गई चरने हरियाली॥

सूरज धूप सुनहली लाया

सड़कों पर न रहा सन्नाटा।
नौकर गया पिसाने आटा॥
इक्के, बग्घी, टमटम, मोटर।
लगे दौड़ने इधर से उधर॥

हलवाई ने आग जलाई।
बनी जलेबी ताजी भाई!
लड़के सब जाते हैं पढ़ने।
लगा ठठेरा लोटा गढ़ने॥

चम-चम चमक रही सुखदाई।
गमले पर लख तितली आई॥
जगा रही माँ उठ, आलस तज।
छप्पर पर आ बैठा सूरज॥

दिन

कैसा है देखो सुन्दर दिन।
जो चाहो सब सकते हो गिन॥
आँखें लख सकतीं हरियाली।
फूल तोड़ सकता है माली॥
चाहे जहाँ अकेले जाओ।
खेलो, खाओ, पढ़ो पढ़ाओ॥

नहीं किसी का अब कुछ डर है ।
सारा जग अपना ही घर है ॥
सड़कों पर कोलाहल छाया ।
यह लो एक मदारी आया ॥
बजा रहा है डमरू डम-डम ।
नचा रहा है भालू छम-छम ॥
मन्दिर में हैं डटे पुजारी ।
भीड़ मदरसे में है भारी ॥
खुले दुकानों के हैं ताले ।
चीख रहे हैं फेरीवाले ॥
कौवे काँ ! काँ ! बोल रहे हैं ।
कुत्ते बिल्ली डोल रहे हैं ॥
अम्मा काढ़ रही हैं जाली ।
आ बैठी है चूड़ी वाली ॥
अन्धकार जो था अति छाया ।
जिसने हमसे जगत छिपाया ॥
देखो बन कर वही उजाला ।
दिखलाता है दृश्य निराला ॥
तितली और पतंगे प्यारे ।
चींटी चिड़ियाँ भौंरे कारे ॥

लगे काम में हैं सब अपने।
नहीं देखता कोई सपने॥
बच्चो! तुम भी काम करो कुछ।
दिन में मत आराम करो कुछ॥
इसीलिये है चतुर विधाता।
दिन का सुन्दर समय बनाता॥

शाम

कैसी घड़ी शाम की आई।
पच्छिम में है लाली छाई॥
गलियों में गोधूली छाई।
हल बैलों ने छुट्टी पाई॥
हिलती हैं अब नहीं लताएँ।
लौट रही हैं बन से गाएँ॥
खुश हो हो किसान गाते हैं।
खेतों से घर को आते हैं॥
पेड़ों पर कोलाहल छाया।
चिड़ियों ने है शोर मचाया॥
गई बालकों से घिर नानी।
सोच रही है नई कहानी॥

मोहन अब खा चुका मलाई।
चन्दा मामा पड़े दिखाई॥
लल्ली भी गाती है लोरी।
कहती—सो जा गुड़िया गोरी॥
उतर रही है नींद निराली।
ले सुन्दर सपनों की जाली॥
बन्द हुए सब खेल खिलौने।
बच्चों के बिछ गये बिछौने॥
क्यों दीपक से खेल रहे हो?
लगा हाथ में तेल रहे हो?
देखो क्या कहते हैं तारे।
शाम हुई सो जाओ प्यारे!

रात

ओहो! समय रात का आया।
कैसा है सन्नाटा छाया॥
अन्धकार फैला है भारी।
सुप्त पड़े हैं सब नर नारी॥
जाग रहा है चाँद अकेला।
गुपचुप है तारों का मेला॥

पर न मिलेगी कहीं मिठाई।
सोए हैं सारे हलवाई॥
जिसने दिन काटे आलस में।
नींद नहीं है उसके बस में॥
जैसे उल्लू या चमगादर।
भटक रहे हैं इधर से उधर॥
सब ही देख रहे हैं सपने।
पड़े पड़े बिस्तर पर अपने॥
नहीं रात में काम सुहाता।
मैं भी हूँ अब सोने जाता॥

वसन्त

आया बच्चो! वसन्त आया।
सब पेड़ों में फूल फुलाया॥
फिर से नई हुई हरियाली।
दुलहिन सी लचकी तरु-डाली॥
भौंरों के दल के दल आए।
सँग में मधु-मक्खियाँ लिवाए॥
मस्त हुए हैं सब मन-मन में।
बंशी सी बजती है बन में॥

कूक रही है कोयल काली।
बजा रहे हैं लड़के ताली॥
और कूक वैसी ही भरते।
खूब नकल कोयल की करते॥
मह मह गलियाँ महक रही हैं।
चह चह चिड़ियाँ चहक रही हैं॥
बढ़ीं उमङ्गें सब के मन में।
दूना बल आया है तन में॥
हे वसन्त! ऋतुओं के राजा!
मुझको इतनी बात सिखा जा॥
नित मैं फूलों सा मुस्काऊँ।
सुख से सब का मन बहलाऊँ॥

गर्मी

गर्मी आई, गर्मी आई,
खूब करो जी स्नान।
संध्या समय छनै ठंडाई,
हो शरबत का पान॥
तरी भरी है तरबूजों में,
खूब उड़ाओ :आम।

अजी न लगते खरबूजों के ,
लेने में कुछ दाम ॥
खस की टट्टी लगी हुई है ,
पंखे का है जोर ।
आँधी आती धूल उड़ाती ,
करती हर हर शोर ॥
बन्द हुआ है स्कूल हमारा ,
अब किसकी परवाह ?
चलो मौज से दावत खावें ,
है मुन्नू का ब्याह ॥
जल में थोड़ा बरफ डाल दो ,
कैसा ठंडा वाह !
जाड़े में था बैर इसी से ,
अब है इसकी चाह ॥
आओ छत पर पतँग उड़ावें ,
सूर्य गये हैं डूब ।
दिन भर घर में बैठे बैठे ,
लगती थी अति ऊब ॥
बजा रहे चिमटा बाबा जी,
करते सीताराम ।

पहन लँगोटा पड़े हुए हैं,
कम्बल का क्या काम ?
शाम हो गई आओ छत पर,
सोवें पाँव पसार ।
विमल चाँदनी छिटक रही है,
ज्यों गंगा की धार ॥
लुप लुप करते अगणित तारे,
ज्यों कंचन के फूल ।
हैं मुझको प्राणों से प्यारे,
सकता इन्हें न भूल ॥
ऐसी सुखमय गर्मी को भी,
बुरा कहो क्यों यार ?
मालुम हुआ आज मुझको—
है झूठा सब संसार ॥

वर्षा ऋतु

चारों ओर मची है हलचल ।
गरज रहे हैं बादल के दल ॥
चमक चमक बिजली जाती है ।
आँखों को चमका जाती है ॥

झम झम बरस रहा है पानी।
घर से नहीं निकलती नानी॥
बेहद घिरी घटा है काली।
बिनती है बूँदों की जाली॥
बादल है अथवा वनमाली?
देखो जहाँ वहीं हरियाली॥
नाच रहे हैं मोर मुरैले।
कीच केंचुए घर घर फैले॥
झरने हैं हो रहे पनाले।
गलियों में बहते हैं नाले॥
धूल जहाँ उड़ती थी बेढब।
वहीं नहाता हाथी है अब॥
नदियाँ हैं समुद्र सी फैली।
लहर रहीं लहरें मटमैली॥
भीगी मिट्टी महक रही है।
जल की चिड़िया चहक रही है॥
मेंढक भी मुँह खोल रहे हैं।
टरटों टरटों बोल रहे हैं॥
भीग रहा बेचारा बन्दर।
उसे बुला लो घर के अन्दर॥

है किसान भी चला रहा हल।
खुश हो उसका रहा मन उछल॥
वर्षा ही उसका जीवन है।
यह ही उस निर्धन का धन है॥
कल जब निकला घर से बाहर।
देखा इन्द्रधनुष था सुन्दर॥
उसमें रंग कहाँ से आया?
अब तक जान न मैंने पाया॥
दौड़ो नहीं फिसल जाओगे।
मुँह में कीचड़ भर लाओगे॥
यहीं बैठ कर देखो बादल।
बनिये का सब नमक गया गल॥
किया पतङ्गों ने है फेरा।
बादल सा दीपक को घेरा॥
बिगड़ रहे बैठक से दादा।
और न अब लिख सकता ज्यादा॥

———

जाड़ा

अब तो ऋतु जाड़े की आई।
ठण्ढी हवा न भाती भाई!
ज्यादा नहीं नहाते हैं अब।
बरफ़ न पीते खाते हैं अब॥

खुली हवा में ऊपर सोना।
सोने से पहिले छत धोना॥
अब न किसी को यह भाता है।
मजा बन्द घर में आता है॥

तनती नहीं मसहरी भाई!
क्योंकि न मच्छर पड़ें दिखाई॥
मक्खी और पतंगे प्यारे।
मरे सभी सर्दी के मारे॥

सूरज डूबा हुआ अँधेरा।
किसी पेड़ पर किया बसेरा॥
बन्द हुआ चिड़ियों का गाना।
शाम सबेरे शोर मचाना॥

हैं जितने गरीब बेचारे।
सिकुड़ रहे सर्दी के मारे॥

थर थर काँप रहा तन सारा।
उन्हें न जाड़ा लगता प्यारा॥
घास फूस का ढेर लगाते।
शाम सबेरे आग जलाते॥
वहीं बैठते मन बहलाते।
किसी तरह से समय बिताते॥

उन दुखियों के बच्चे प्यारे।
चिथड़ों से तन ढँके दुलारे॥
तरस कोट को वे जाते हैं।
कभी न सुख से सो पाते हैं॥

खों! खों! खाँस रही है नानी।
ओढ़ रजाई एक पुरानी॥
कहती है नित नई कहानी।
फिर भी सर्दी पड़ती खानी॥

अब कोई तरबूज न खाता।
खरबूजे का जिक्र न आता॥
आम और जामुन की भाई!
लड़कों ने है याद भुलाई॥

कोई फली मटर की खाते।
गन्ने, बेर किसी को भाते॥

नारंगी, अमरूद निराले।
जो जितना चाहे मँगवा ले॥

पौदों पर पड़ता है पाला।
हो मानों चाँदी का जाला॥
हरी घास पर ओस मनोहर।
लगती है मोती सी सुन्दर॥

कभी कभी जो कुहरा छाता।
किसे नहीं वह बोलो भाता?
मानों पहिन धुँवें की धोती।
हवा ठंढ खा फिरती रोती॥

उँगली जब सर्दी खाती है।
कलम नहीं पकड़ी जाती है॥
कुछ का कुछ हम लिख जाते हैं।
मुट्ठी भी न बांध पाते हैं॥

कपड़े ऊनी गये निकाले।
पीले, लाल, बैंगनी, काले॥
नीले, हरे और मटमैले।
तरह तरह के कपड़े फैले॥

कमरे में है आग जलाई।
गद्दी भी गुदगुदी बिछाई॥
सोते ओढ़ लिहाफ रजाई।
जब तक धूप न पड़े दिखाई॥

लादे तन पर बड़ा लबादा।
चाय चाय चिल्लाते दादा॥
अब न कभी पीते ठण्ढाई।
सिल-बट्टे की याद भुलाई॥

जाड़ा भी क्या खूब बनाया।
देखो तो ईश्वर की माया॥
ओहो, वहाँ धूप हो आई।
चलो वहीं अब बैठें भाई॥

ईश्वर

यह दुनिया है जिसकी माया,
नाम उसी का ईश्वर है।
जिसने सारा जगत बनाया,
नाम उसी का ईश्वर है॥

जो है सारे जग का पालक,
नाम उसी का ईश्वर है।
हैं जिसके हम सारे बालक,
नाम उसी का ईश्वर है॥
उससे ही निकले हैं बच्चो!
आग हवा पृथ्वी पानी।
उससे ही आकाश बना है,
है वह बड़ा बली ज्ञानी॥
अन्त किसी को मिला न उसका,
वह अनन्त कहलाता है।
पार नहीं उसकी महिमा का,
कोई जग में पाता है॥
दिन है बच्चो तेज उसी का,
रात उसी की छाया है।
उससे ही सब खेल तमाशा,
इस दुनिया ने पाया है॥
चींटी से लेकर हाथी तक,
उसने सभी बनाया है।
देखो कैसा कारीगर है,
कैसा जग उपजाया है॥

दर्पण में अपना मुँह देखो,
और जोर से हँसो जरा।
कह सकता है कौन नहीं,
है इसमें अति आश्चर्य भरा॥
कान बने बाजे सुनने को,
आँख तमाशे लखने को।
जीभ बनी बातें करने को,
मीठी चीजें चखने को॥
साँस नाक से लेते हो तुम,
बास मनोहर पाते हो।
मोती से क्या दाँत बने हैं,
जिनसे मेवा खाते हो॥
क्या चतुराई से चेहरे की,
सूरत गोल बनाई है।
देखो कारीगरी अनोखी,
कैसी खोल दिखायी है॥
इसी तरह तुम जो देखोगे,
उस पर ही चकराओगे।

नहीं दोष ईश्वर की रचना,
में कोई लख पाओगे ॥
पेड़ों की पत्ती पत्ती को,
वह सँवारने वाला है।
राजाओं का राजा है वह,
उसका ठाट निराला है ॥
चिड़ियों में वह चहक रहा है,
महक रहा है फूलों में।
हिलती डाली डाली के वह,
भूल रहा है भूलों में ॥
नाव चन्द्र की खेता है वह,
हँसता है वह तारों में।
लहरों पर वह लोट लगाता,
बहता है जल धारों में ॥
ऐसी कोई चीज़ नहीं है,
जिसमें उसका बास न हो।
ऐसा कोई मनुज नहीं है,
जिसके वह अति पास न हो ॥
लड़कों में वह खेला करता,
पर न देख हम पाते हैं।

गुण अवगुण सब हम लोगों के,
उसको किन्तु लखाते हैं ॥
सच्चा स्वामी सबका है वह,
वही सुखों का दाता है।
वही हमारा परम पिता है,
वही हमारी माता है।
जो जन उससे प्रेम बढ़ाता,
सादर शीश झुकाता है।
सूरज सा उसको वह स्वामी,
त्रिभुवन में चमकाता है ॥

आकाश

जिसमें अपनी नाव चलाता,
दिन भर सूरज चमकीला।
और रात में तारों को ले,
चन्द्र जहाँ करता लीला ॥
जिसकी गोदी में शिशु-हाथी,
सा फिरता बादल गीला।
हिलती हरियाली के ऊपर,
छाया जो नीला नीला ॥

वह ही है आकाश बालको,
जिसका है कुछ ओर न छोर ॥
गर्व बड़प्पन का हो जिसको,
पहले देखे उसकी ओर ॥

हवा

हवा तू रहती है किस ठौर ?
भला तेरा है कैसा गात ?
न करती क्या भोजन दो कौर ?
और चलती रहती दिन रात ॥
बादलों पर क्या तेरी सेज ?
खेलती क्या लहरों के साथ ?
रम्य हरियाली तेरा तेज,
खड़ी है क्या कर अपने हाथ ?
हिला पेड़ों की डाली रोज,
झुला कर उनके फूले फूल ।
किया नित किसकी करती खोज ?
रही है किस उलझन में भूल ?

हुई यह कैसी सनक सवार ?
अरी ! कुछ कह तो अपना हाल ।
तुझे हम अति करते हैं प्यार,
हरेंगे तेरा दुख तत्काल ॥
मगर तू तो दर्शन भी भूल,
न देती है होकर भी पास ।
यही क्या है उन्नति का मूल,
न रखना कभी किसी से आस ।
हृदय में क्यों न उठे यह बात,
तुझे तब देख लगाते गस्त ।
उचित है हमको भी दिन रात,
पड़े रहना निज धुन में मस्त ॥

आग ✓

सूरज का तू टुकड़ा है या,
बिजली की तू बेटी है ।
या तारों के साथ कभी तू,
आसमान में लेटी है ॥
आग बता सीखा है किससे,
तू ने यह चमचम करना ।

काले बुरे कोयलों में,
सोने की सी रंगत भरना ॥
रंग रूप है बड़ा अनोखा,
तेज निराला है तेरा।
तेरे साथ खेलने को नित,
चित्त चाहता है मेरा ॥
माना मैंने मेरा खाना,
तू ही सदा पकाती है।
पर यदि थोड़ा भी छूता हूँ,
तो क्यों मुझे जलाती है ॥
सच कहता हूँ अगर न होती,
तुझमें ऐसी आँच कड़ी।
तो लड़के लड़कियाँ खेलते,
तुझको ले ले घड़ी घड़ी ॥
बिना दाँत के बच्चे तो,
तुझको खा भी शायद जाते।
क्योंकि सदा वे मुँह में भर,
लेते हैं जो कुछ भी पाते ॥

—

पानी

बादल है पानी की माया।
सागर है पानी की काया ॥
नदी और तालाब निराले।
गये सभी पानी से ढाले ॥
पानी में हम नाव चलाते।
पानी में हम रोज नहाते ॥
पानी में हम पाते मोती।
पानी से है खेती होती ॥
पानी में लकड़ी बहती है।
पानी में मछली रहती है ॥
पानी ही से है हरियाली।
पानी है ईश्वर का माली ॥
पानी लाओ ! पानी लाओ !
प्यास लगी है पानी लाओ ॥
ठंढा पानी पीता हूँ मैं।
पानी के बल जीता हूँ मैं ॥
पानी तो है बड़े काम का।
फिर भी मिलता बिना दाम का ॥

ऐसे ही होते वे बच्चे।
जो जग के हैं सेवक सच्चे॥

पृथ्वी

पृथ्वी माता ! पृथ्वी माता !
तुम न लगा सकती हो छाता॥
जब बादल बरसाता पानी।
जब गरमी पड़ती मनमानी॥

कैसे यह दुख तुम सहती हो।
नहीं किसी से कुछ कहती हो॥
शायद है न तुम्हारे माता।
मिले कहाँ से तुमको छाता॥

तुम पर खड़े पहाड़ अनेकों।
तुम पर पड़े समुद्र अनेकों॥
लिये हुए यह बोझा भारी।
कब तक खड़ी रहोगी प्यारी?

आओ पास हमारे आओ।
खेलो कूदो मन बहलाओ॥

हो तुम गेंद की तरह गोली।
छोटी भी बन जाओ भोली॥
साथ हमारे खेल मचाना।
हँसना हमको खूब हँसाना॥
अगर कहीं बरसेगा पानी।
छाता मैं तानूँगा रानी॥
पृथ्वी बोली—प्यारे बेटे?
मेरे राजदुलारे बेटे?
अगर गेंद मैं बन जाऊँगी।
तो न काम की रह जाऊँगी॥
जग के प्राणी क्या खायँगे।
और कहाँ रहने जायँगे॥
सोच न केवल अपनी घातें।
कर दुनिया के हित की बातें॥

सूरज

देखो सूरज चमक रहा है।
अङ्गारे सा दमक रहा है॥
चकाचौंध आँखों में आती।
यह रोशनी न देखी जाती॥

बिजली जो बसती बादल में।
चमका देती आँखें पल में॥
क्या यह उसका ही है गोला।
या निज नयन ईश ने खोला॥
दिन भर यह चलता रहता है।
दीपक सा जलता रहता है॥
रात कहीं सोने जाता है।
और सवेरे फिर आता है॥
कोल्हू में पेरा सा रहता।
क्या जाने कितने दुख सहता॥
किसका डर है इसको भाई।
जिससे यह सहता कठिनाई॥
नहीं किसी का डर है इसको।
किन्तु ध्यान है जग का इसको॥
अगर न आ यह करे उजाला।
तो पड़ जाय विश्व में पाला॥
भार जगत सेवा का ले सिर।
रह कैसे यह सकता है थिर॥
इसीलिये है सदा समय पर।
करता दूर अँधेरा आकर॥

अगर नियम से आलस खोकर।
तुम भी काम करो दृढ़ होकर॥
सत्य, प्रेम से उर चमकाओ।
तो सूरज ही से हो जाओ॥

चन्द्रमा

चारु चन्द्रमा निकला भाई।
कैसी विमल चांदनी छाई॥
मनो उज्ज्वल शीशा भारी।
ढाँक रहा हो दुनिया सारी॥
लुप लुप करते या मन मारे।
आसमान में जितने तारे॥
है यह उनका सबका राजा।
कैसा सुन्दर लश्कर साजा॥
अगर न होता कभी अँधेरा।
रहता सदा सूर्य का फेरा॥
तो शशि की यह सुन्दरताई।
कभी न पड़ती मित्र दिखाई॥
सूरज है ज्यादा गरमाता।
लखते चकाचौंध हो जाता॥

इसीलिए वह सदा अकेला।
आसमान में करता खेला॥
यों होते जो लड़के प्यारे।
क्रोधी, दुष्ट, मूर्ख, मन मारे॥
कोई उनका साथ न देता।
कभी न वे बन सकते नेता॥
पर जो शशि समान हैं कोमल।
नहीं किसी से कुछ करते छल॥
बन जाते वे सबके प्यारे।
तारों में ज्यों चन्द पधारे॥
यह घटता बढ़ता रहता है।
पर न किसी से कुछ कहता है॥
काम नियम पर अपना करता।
दुख सुख सब में धीरज धरता॥
कविगण इसका ही गुण गाते।
सुन्दर इसे विशेष बताते॥
ओहो! रात हुई अब ज्यादा।
देखो नाक बजाते दादा॥
जल्दी अम्मा दूध पिला दे।
चन्दा को झट यहाँ बुला दे॥

यदि उसके सँग सोऊँगा मैं।
तो न कभी भी रोऊँगा मैं॥
आ! ले! दूध मलाई खा! खा!
चन्द्रा मामा आ! आ! आ! आ!

तारे

कैसे चमक रहे हैं तारे।
आसमान तो लख अम्मा रे!
मानो हों आँखें तेरी ही।
लखती हों सूरत मेरी ही॥
अगर कहीं ये शोर मचावें।
तो न रात हम सोने पावें॥
हैं चुपचाप काम निज करते।
लेकिन नहीं किसी से डरते॥
पर जब लड़के पढ़ने जाते।
बहुत बहुत वे शोर मचाते॥
हार मास्टर भी जाता है।
हल्ला पर न दबा पाता है॥
बिना मास्टर और बिना डर।
रहें शान्ति से तारे सुन्दर॥

शिशु की सुन ये बातें भोली ।
हँस करके माता यों बोली ॥
जो लड़के यह समझें लल्ला ।
तो न मदरसे में हो हल्ला ॥

बादल

देखो बादल गरज रहे हैं ।
आसमान में लरज रहे हैं ॥
पूरब से दौड़े आते हैं ।
जाने कहाँ भगे जाते हैं ॥
दिन चढ़ता है या ढलता है ।
पता न सूरज का चलता है ।
आज न दिन का होगा फेरा ।
बना रहेगा सुभग सवेरा ॥
नाच रहे हैं मोरों के दल ।
मची हुई है बन में हलचल ॥
चिड़ियाँ उड़तीं शोर मचातीं ।
गौएँ इत उत दौड़ लगातीं ॥
लड़के झूले झूल रहे हैं ।
फूल अनेकों फूल रहे हैं ॥

छाई है बन में हरियाली ।
बहती ठण्डी हवा निराली ॥
कहीं सफेद कहीं हैं काले ।
कहीं रुई से फूले फाले ॥
बढ़ते ही आते हैं बादल ।
मनमाना बरसाते हैं जल ॥
पानी भला कहाँ ये पाते ।
क्यों इतना ये शोर मचाते ॥
हाँ उस दिन कहती थी नानी ।
लाते ये समुद्र से पानी ॥
भर लाते मटके के मटके ।
जो अदृश्य हैं रहते लटके ॥
उनसे ही उँडेल देते हैं ।
पानी बरसा यश लेते हैं ॥
नहीं नहीं यह बात नहीं है ।
ऐसा होता नहीं कहीं है ॥
जब गर्मी पड़ती है भारी ।
जल उठती है पृथ्वी सारी ॥
जल समुद्र का भाप बनाता ।
जितना ही सूरज गरमाता ॥

ले उड़ती है उसे हवा फिर।
हम कहते हैं घटा रही घिर॥
ऊपर जा जब ठंढक पाती।
भाप पुनः पानी हो जाती॥
बोझ न सकती हवा उठा जब।
कुछ बूँदें बन गिर जातीं तब॥
ऊँचे जहाँ पहाड़ खड़े हैं।
बादल से भी बहुत बड़े हैं॥
वहीं पहुँच ये टकरा जाते।
पानी हो फिर भू पर आते॥
हमको क्या इससे करना है।
केवल यही चित्त धरना है॥
बादल जो यह जल बरसाते।
क्या कुछ उससे लाभ उठाते॥
हाँ! निःस्वार्थ यही सेवा है।
इसमें ही मिलता मेवा है॥
बादल से ही हों जग-पालक।
बढ़कर वीर व्रती हम बालक॥
पूर्ण हमारी हो यह आशा।
तो न रहेगी कुछ अभिलाषा॥

ओ हो! घर को भागो भाई।
चकचौंधी आँखों में आई॥

बिजली

ज्यों ही तू दिखलायी पड़ती,
त्यों ही तू छिप जाती है।
किसे झाँकने बतला बिजली,
दौड़ दौड़ कर आती है॥
छूट रही है मानो सोने,
के पानी की पिचकारी।
ऐसा सुन्दर रूप कहाँ से,
बतला तो पाया प्यारी॥
साथ खेलने को हमको है,
क्या तू बिजली बुला रही।
किसी परी के रोते शिशु को,
या थपकी दे सुला रही॥
या पृथ्वी पर पास किसी के,
चाह रही है तू आना॥
या बादल का चाम चीर कर,
सुनती उसका गुर्राना॥

अरी ! इशारा करती है क्या,
चमका कर आँखें मेरी।
कौन समझ सकता है ऐसी,
गुपचुप की बोली तेरी॥

शायद तेरी माँ ने भी है,
कहा खिलौने देने को।
जिससे ऐसा थिरक रही है,
उन्हें अभी से लेने को॥

इन्द्रधनुष

इन्द्रधनुष निकला है कैसा।
कभी न देखा होगा ऐसा॥
रंग बिरंगा नया निराला।
पीला लाल बैंगनी काला॥

हरा और नारङ्गी नीला।
चोखा चमकदार चटकीला॥
इस दुनिया से आसमान पर।
पुल सा चढ़ा हुआ है सुन्दर॥

है कतार मोरों की आला।
या बहुरङ्गी मोहन माला॥
अटक गया है बादल में या।
सूर्यदेव के रथ का पहिया॥

पृथ्वी पर छाई हरियाली।
बहती ठंढी हवा निराली॥
जरा जरा बूँदें झड़ती हैं।
नदियाँ क्या उमड़ी पड़ती हैं॥

इन सब से है बढ़ कर इकला।
वह जो इन्द्र-धनुष है निकला॥
खड़ा स्वर्ग का सा दरवाजा।
तू भी लख ले अम्मा ! आ जा॥

वर्षा की बूंदें

बड़ी बड़ी बूँदें पड़ती हैं,
बड़ा मजा है बड़ा मजा।
जल्दी निकलो घर से बाहर,
बड़ा मजा है बड़ा मजा॥

दल के दल दौड़े आते हैं,
देखो बादल के कैसे।
छुट्टी का घंटा बजते ही,
भगते हैं लड़के जैसे॥
डाली डाली पर पेड़ों की,
नाच रही है हरियाली।
खुश हो मुन्नी बजा रही है,
अपनी छत पर से ताली॥
पूँछ उठा कर दौड़ रही हैं,
घीसू की तीनों गायें।
इस चबूतरे पर चढ़ आओ,
यहाँ भी न वे आ जायें॥
कैसी ठंडी हवा बही है,
कैसा समय निराला है!
देखो उस ऊँचे पीपल में,
किसने झूला डाला है॥
सूरज का न पता चलता है,
कैसा बढ़ा अँधेरा है।
खूब घुमड़ कर आज घनों ने,
आसमान को घेरा है॥

अरे सुनो तो कैसी प्यारी,
बोली बोल रहा है मोर।
आओ हम भी दौड़ चलें अब,
फौरन उसी बाग की ओर॥

ओहो! भाई, भागो भागो,
लगा बरसने पानी अब।
पेड़ तले बच नहीं सकेंगे,
कपड़े भीग जायँगे सब॥

ओला

देखो पड़ा हुआ है ओला।
कैसा सुन्दर इसका चोला॥
हो मानों हीरे का रोड़ा।
जो न कभी जा सकता तोड़ा॥

पर यह तो है गला जा रहा।
क्यों ऐसा दुख भला पा रहा॥
इसका भी है कारण बच्चों।
किया गर्व था धारण बच्चो॥

यद्यपि तेरी सूरत काली
फिर भी बोली बोल निराली ॥
सब ऐबों से बच जाती है।
नहीं कुरूपा कहलाती है ॥

आ प्यारी! गोदी में आ जा।
कू! कू! कर कानों में गा जा ॥
मैं भी मधुर वचन बोलूँगा।
जब जब अपना मुँह खोलूँगा ॥

तोता

सीताराम नाम है इसका।
रटना यही काम है इसका ॥
माँ! कैसे पाला यह तोता?
पिंजड़े में डाला यह तोता?

सूरत इसकी भोली भाली।
बोली इसकी बड़ी निराली ॥
नहीं किसी को दुख पहुँचाता।
इसीलिये क्या आदर पाता?

अब यह पिँजड़े का राजा है।
मुझसे नित सुनता बाजा है ॥
और नाम ले लेकर मेरा।
सदा मुझे करता है टेरा ॥

जब कोई घर में आता है।
तो यह यों कह चिल्लाता है ॥
आओ भाई! आओ भाई!
अपना नाम बताओ भाई!

पढ़ता ही रहता है सब दिन।
पर न पाँच तक भी सकता गिन ॥
उसका गणित सीखना कैसा?
जिसे नहीं गिनना है पैसा ॥

यह अखरोट तोड़ लेता है।
यह बादाम फोड़ लेता है ॥
मेवे सभी उड़ाता है यह।
मिर्च चाव से खाता है यह ॥

पहले यह सागर के तल पर।
था पानी बिलकुल चम्मच भर॥
लहरों में आदर पाता था।
उछल उछल हँसता गाता था॥

सूरज की किरणों में पड़ कर।
भाप बना यह निज तन तजकर॥
उठते उठते ऊपर आया।
मिली घनों में इसकी काया॥

बिजली चमकी गरजा बादल।
समझा इसने है मुझमें बल॥
इस प्रकार हो गया गुमानी।
भूल गया सागर का पानी॥

फिर तो जब नीचे को देखा।
तुच्छ बहुत सागर को लेखा॥
यों घमण्ड में उड़ता ऊपर।
आज गिर पड़ा देखो भूपर॥

अब न रही वह बिजली प्यारी।
या बादल के महल-अटारी॥
देखो हीरे सा सुन्दर तन।
रहा धूल में है बच्चो! सन॥

है जो पदवी पा इतराता।
स्वजनों से तज देता नाता॥
उसे चाहिये नहीं भुलानी।
ओले की यह करुण कहानी॥

कुहरा

देखो कैसा कुहरा छाया।
कुहरे में है जगत समाया॥
मानों निज रूठी बूंदों को,
बादल स्वयं मनाने आया॥

यद्यपि है अब नहीं अँधेरा,
भली भाँति हो गया सबेरा।
पर न पता चलता चिड़ियों ने,
है छोड़ा या नहीं बसेरा॥

धूप अगर कुछ भी हो आती।
तो यों सरदी नहीं सताती॥
ठंडक से वह जकड़ी तितली,
हाथ न मुन्नी के पड़ जाती॥

हुई आह ! किरणों की बरसा ,
कुहरा सारा गया कतर सा ।
देखो जहाँ वहीं दिखता है ,
उठता सा उज्ज्वल चद्दर सा ॥

गई उधर वह खुल हरियाली ,
देखो कैसी छटा निराली ।
चहक उठीं खुश होकर चिड़ियाँ ;
लगी डोलने डाली डाली ॥

यदि चाहो यह दृश्य लुभाना ,
लखना लखकर मन बहलाना ।
जब तक जाड़े का मौसम है ,
प्रति दिन सुबह खेत में जाना ॥

ओस

प्यारी ओस ! दुलारी ओस !
सकुचीली सुकुमारी ओस !
आ उँगली पर आ री ओस !
ओहो ! तू न बनी क्यों ठोस ?

छुआ नहीं औ' हुई अलोप ।
है यह हँसी, खेल या कोप ॥
आएगी न हमारे हाथ ।
तो खेलेगी किसके साथ ॥
क्या न जानती थी तू बोल ।
यह तेरा सुन्दर तन गोल ।
छूने को होंगे तैयार ।
तुझे करेंगे लड़के प्यार ॥
ज्यों तजने पर मछली नीर ।
मर जाती पाती अति पीर ॥
उसी भाँति क्या पौधे घास ।
तज तू कहीं न करती वास ॥
यदि है यही अनोखी बात ।
तो न छुऊँगा मैं तृन पात ॥
सुख से तू फूलों पर फूल ।
मनमाना घासों पर भूल ॥
जिसने तुझे किया तैयार ।
तन में भर यह छटा अपार ॥
उस कारीगर को है धन्य !
पहुँचे उसे प्रणाम अनन्य ॥

फौव्वारा

देखो छूट रहा फौव्वारा।

बूँदों के क्या झुण्ड निकलते,
मोती से हैं आते ढलते।
पर छूते ही छिन में गलते।
पकड़ न कोई सकता कुछ भी,
चलता नहीं किसी का चारा।
देखो छूट रहा फौव्वारा॥

हँसता ही रहता है हर दम,
चमक धूप में उठता चम चम।
इसकी करें बड़ाई क्या हम!
जड़ा मोतियों से चाँदी का—
खड़ा पेड़ सा है अति न्यारा।
देखो छूट रहा फौव्वारा॥

हरी हरी घासें लहरातीं,
नाच नाच क्या खूब नहातीं।
पल पल में हैं भीगी जातीं।
बरसा की है लगी झड़ी सी,
ओहो! भीगा कोट हमारा।
देखो छूट रहा फौव्वारा॥

यदि मैं भी ऐसा बन जाता,
हँसता लड़कों में मिल गाता।
औ' असली मोती बरसाता।
झरझर झरझर करकर के नित,
भर देता धन से जग सारा।
देखो छूट रहा फौव्वारा॥

तालाब

काई ने डाला है डेरा।
बहुत बुढ़ापे ने है घेरा॥
अति तालाब पुराना है यह।
तालाबों का नाना है यह॥

अगणित ईंटें फूट गई हैं।
सभी सीढ़ियाँ टूट गई हैं॥
फिर भी भीड़ लगी है भारी।
नहा रहे हैं शिशु नर नारी॥

चाहे जितना यार नहाओ।
किन्तु मछलियों को न सताओ॥

क्योंकि उन्हीं का यह प्रिय घर है।
नहीं मगर का इसमें डर है॥

गाएँ इसमें पीतीं पानी।
भैंसें हैं करतीं मनमानी॥
कभी कभी हाथी आता है।
जो अति कमलों को खाता है॥

जब सब प्राणी हैं सो जाते।
चीते शेर रात में आते॥
नहीं किसी के लिये मनाही।
सब करते हैं लापरवाही॥

पर प्यारा तालाब पुराना।
करता नहीं बुरा कुछ माना॥
रखता है नित निर्मल पानी।
हो मानों कोई गुरु ज्ञानी॥

समुद्र

लहर लहर लहराता रहता।
गरज गरज कर क्या तू कहता?

कभी नहीं चुप होता है क्यों?
कभी नहीं तू सोता है क्यों?

बड़ी निराली तेरी माया।
मैंने तेरा अन्त न पाया॥
यद्यपि है तू पड़ा अकेला।
किन्तु लगा सा है इक मेला॥

लहरें लोट पोट हो जातीं।
नाच नाच हैं नहीं अघातीं॥
मानों तू है उनका बेटा।
जो कि पालने पर है लेटा॥

झूम रहा है झूल रहा है।
पचक रहा है फूल रहा है॥
तू अति चञ्चल अलबेला है।
बालक सा करता खेला है॥

ऊपर नीला नीचे नीला।
शान्तिमयी है तेरी लीला॥
यानी तू नभ चूम रहा है।
यद्यपि भू पर झूम रहा है॥

हे समुद्र ! इतना ही कर दे ।
मुझमें भी निज साहस भर दे ॥
थकूँ न नेक न हिम्मत हारूँ ।
तुझ सा जग में सुयश पसारूँ ॥

———

भारतवर्ष

प्यारा भारतवर्ष हमारा,
देश बड़ा ही नामी है ।
तीन लोक से न्यारा है यह,
सब देशों का स्वामी है ॥

ऋषियों की यह तपोभूमि है,
वीरों की यह धरती है ।
स्वर्ग भूमि भी इसकी समता,
करने से नित डरती है ॥

बादल से भी ऊँचा उठता,
मुकुट हिमालय है इसका ।
सूरज की किरणें सोने से,
मढ़ देती हैं तन जिसका ॥

बहती है गङ्गा की धारा,
अमृत सा जिसका जल है ।
चूम रहा है चरण समुन्दर,
जिसमें अति अपार बल है ॥

जन्म लिया था यहीं राम ने,
पैदा हुईं यहीं सीता ।
यहीं चराई गाय श्याम ने,
वंशी के बल जग जीता ॥

पहले पहल यहीं ऋषियों ने,
मंत्र वेद का गाया है ।
ज्ञान यहीं से अपना सारा,
इस दुनियां ने पाया है ॥

बड़े भाग्य से दिया यहीं,
हमको भी जन्म विधाता ने ।
पहले पहल इसी पृथ्वी पर,
खड़ा किया है माता ने ॥

इसके ही जलवायु आदि से,
बना हमारा यह तन है ।
इसके रंग विरंगे फूलों—
को लख फूल रहा मन है ॥

इसीलिये हम कहते हैं,
यह भारतवर्ष हमारा है।
माता की गोदी सा हमको,
जो सदैव ही प्यारा है॥
हरे भरे खेतों में इसके,
भरा हमारा है जीवन।
क्यों न निछावर कर दें इसपर,
हम भी अपना तन मन धन॥

धूल

जब मैं छोटा सा बच्चा था,
खेला करता था अति धूल।
कहती थी माँ—"फूल रहा है,
वाह! धूल में क्या ही फूल॥"
मुझसे ही कितने ही बच्चे,
थे सच्चे मेरे साथी।
कोई बन जाता था घोड़ा,
कोई बनता था हाथी॥

लकड़ी के हल बैल बना कर,
कोई बनता चतुर किसान।
कहीं बाग तालाब दीखते,
बनते कहीं खेत खलिहान॥
मनमाना घर बना धूल में,
खेला करते थे सब लोग।
हाय! न अब आ सकता है,
जीवन में वह सुखमय संयोग॥
खेल न है वह मेल न है वह,
गये धूल में मिल सारे।
चिन्ताओं में चूर पड़े हैं,
सब संगी साथी प्यारे॥
अरी धूल! तू तो है अब भी,
हाँ, न रहा बचपन मेरा।
पर इससे क्या—उर में है,
वैसा ही पूर्ण प्यार तेरा॥
मातृभूमि की सेवा का जो,
लेते हैं अपने सिर भार।
वे अवश्य ही बाल्य काल में,
कर चुकते हैं तुझको प्यार॥

राम

हम लाड़ले हैं राम के हम राम की सन्तान हैं।
अब भी हमारी जीभ पर सब राम के गुण गान हैं॥
जब राम थे निर्दोष हम दोषी कहावेंगे नहीं।
श्री राम के शुभ नाम पर कालिख लगावेंगे नहीं॥

माता पिता का मान करना राम ही थे जानते।
निज भाइयों को प्यार करना राम ही थे जानते॥
हम भी घरों में प्रेम की गङ्गा बहावेंगे सदा।
झगड़े न आपस के हमें आकर सतावेंगे सदा॥

तज राज धन, बन बन बिचरना राम ही का काम था।
निज देश का सब दुःख हरना राम ही का काम था।
हम भी दुखी लख देश की सुख नींद सोवेंगे नहीं।
श्री राम के शुभ नाम का अभिमान खोवेंगे नहीं॥

रावण सरीखे शत्रु से थे राम भय खाते नहीं।
यह बात होती तो उसे जल्दी हरा पाते नहीं॥
हम भी खलों के सामने निज सिर झुका सकते नहीं।
जब शत्रु होगा सामने तब हम लुका सकते नहीं॥

अब भी बनी है राम की हममें बड़ी वह बीरता।
अब भी बनी है राम की हममें बड़ी वह धीरता॥

तो क्यों न लेकर राम का हम नाम फिर जय बोल दें।
निज देश की दुख-दीनता के बन्धनों को खोल दें॥

कृष्ण

देश में जब बढ़ गया था खूब अत्याचार।
जेल में तब था लिया श्री कृष्ण ने अवतार॥
बेड़ियों में थे कसे माँ बाप भी लाचार।
नाचती थी ओर चारों कंस की तलवार॥

किन्तु बालक कृष्ण का टेढ़ा हुआ नहिं बाल।
रात ही भर में गये वे नन्द के बन लाल॥
देख उनकी बाल लीला का बड़ा व्यापार।
प्राण से भी बढ़ उन्हें करने लगे जन प्यार॥

गूँजने बन में लगी अति बाँसुरी की तान।
मिल गया जिसमें अनोखा गोपियों का गान॥
औ' लगीं गौवें विचरने दूध देने खूब।
घी दही खा खा हुए सब लोग मोटे खूब॥

कंस को भी एक दिन डाला उन्होंने मार।
दुष्टता से था दुखी जिसके सभी संसार॥

हो गया आनन्द ही आनन्दमय सब देश।
था किसी भी जीवधारी को नहीं कुछ क्लेश॥

देख कर कठिनाइयों की सामने दीवाल।
चाहिये तुमको न हिम्मत हार बैठो लाल!
"सत्य की होती सदा है जीत" कहते श्याम।
जीत से मुख मोड़ना है कायरों का काम॥

हिमालय

लखो हिमालय है क्या लेटा।
हो मानों पृथ्वी का बेटा॥
यदि वैसा तुम भी तन पाते।
तो किस तरह मदरसे जाते॥
यह कालिज में पढ़ा नहीं है।
मोटर पर भी चढ़ा नहीं है॥
पर मूरख न इसे कह देना।
बच्चो! इससे शिक्षा लेना॥
बड़ी बली है इसकी छाती।
जो गंगा की धार बहाती॥

जिसमें हैं हम नाव चलाते।
जिसमें हैं हम खूब नहाते॥
बादल इसमें अड़ जाते हैं।
मनमाना जल बरसाते हैं॥
जिससे होती खेतीबारी।
खाते हम पूरी तरकारी॥
दुश्मन इसे देख डर जाते।
बल का इसके पार न पाते॥
पहरेदार हमारा है यह।
कहो न किसको प्यारा है यह॥
घोर घटा सा खड़ा हुआ है।
महाबली सा अड़ा हुआ है॥
सेवा करना इससे सीखो।
कभी न डरना इससे सीखो॥

गङ्गा जी

गंगा कहाँ बही जाती हो?
चली कहाँ से तुम आती हो?
जाने कब से खेल रही हो?
क्या न जरा तुम सुस्ताती हो?

मिली कहाँ से यह जल-धारा ?
कैसे यह बन गया किनारा ?
किसका किसका मन हरने को—
दिया काट यह नया कगारा ?
कैसी लहरें लहराती हो ?
चमचम बालू चमकाती हो।
क्या रोती है कोई लड़की ?
जिसका मन तुम बहलाती हो ?
हँस-मुख भेष बनाया कैसे ?
कब से थिरक रही हो ऐसे ?
नये खिलौने लाने के हित,
मिले तुम्हें भी क्या कुछ पैसे ?
जो गङ्गा है नभ में ऊपर,
जो तुमको छोरों पर छूकर।
आधी रात हँसा करती है,
क्या तुम उसकी भगिनी भू पर ?
अगणित नावें तुम पर चलतीं,
अगणित जानें तुम में पलतीं।
उछल खुशी से मैं जाता हूँ,
जब जब हैं मछलियाँ उछलती ॥

तज सकता भू का सुख सारा,
दे सकता निज जीवन प्यारा।
पर न कभी मैं रह सकता हूँ,
कर तुमको नयनों से न्यारा ॥

समय का फेरा

करता सदा समय है फेरा।
रात गई फिर हुआ सबेरा ॥
गया सबेरा तो दिन आया।
दिन भर में दिन गया बिताया ॥

फिर आई संध्या की बेला।
समय इसी विधि करता खेला ॥
यों ही बीतीं अगणित सालें।
चलीं समय ने अगणित चालें ॥

फूल मनोहर जो खिलता है।
रूप जिसे सुन्दर मिलता है ॥
वही सूख जाता दो दिन में।
परिवर्तन होता छिन छिन में ॥

कहीं शहर जङ्गल हो जाता।
और कहीं जङ्गल बस जाता॥
कहीं न रहते दोनों भू पर।
आ जाते समुद्र या ऊसर॥

जिस घर में हम खेला करते।
लड़कों को ले मेला करते॥
कभी वहीं पर दादा मेरे।
मुझसे ही थे करते फेरे॥

कभी यहीं पर हम न रहेंगे।
और न ऐसी बात कहेंगे॥
आ पहुँचेंगे नाती पोते।
शोर मचाते हँसते रोते॥

फिर जाने होवेगा क्या क्या?
औ' यह घर खोयेगा क्या क्या?
और न जाने क्या क्या पाकर?
बिगड़ेगा सुधरेगा यह घर॥

इसी तरह यह देश हमारा।
जाने कैसा होगा प्यारा॥
कभी राम थे इसमें खेले।
कष्ट अनेकों इसमें झेले॥

कभी हुए वे इसके स्वामी।
कभी कृष्ण आए अति मानी॥
औ' अब हैं हम देखो कैसे।
उनके ही बच्चे हा! ऐसे॥

आगे क्या होने वाला है?
कौन इसे कहने वाला है?
हाँ जब पूरा होगा चक्कर।
फिर चमकेगा भारत सुन्दर॥

दुखी अगर हो प्यारे बच्चो!
करो न सोच हमारे बच्चो!
होगा सही समय का फेरा।
फिर आएगा वही सबेरा॥

वाटिका

देखो यह वाटिका निराली।
मन हरने वाली हरियाली॥
झूम रही क्या डाली डाली।
लगा सींचने में है माली॥

पत्तों का हिलना है जारी।
फूलों का खिलना है जारी॥
महक रही हैं गलियाँ सारी।
चहक रही हैं चिड़ियाँ प्यारी॥

खिली चमेली फूला बेला।
भारी है भौंरों का मेला॥
खड़ा हुआ है क्या अलबेला।
लिये फलों का गुच्छा केला॥

रंग बिरंगे सुन्दर सुन्दर।
चुन चुन कर मैं फूल मनोहर॥
लूँगा छिन भर में टोपी भर।
दूँगा सबको हार बना कर॥

रोज यहीं पर आता हूँ मैं।
खूब घूमता गाता हूँ मैं॥
हवा प्रात की खाता हूँ मैं।
मनमाना सुख पाता हूँ मैं॥

कौवा

वह बैठा है कौवा काला।
उसे खिलाऊँ माँ! रोटी ला॥
काँ! काँ! काँ! चिल्लाता है वह।
कौवे कई बुलाता है वह॥
आँगन में अब आये हैं सब।
खाने को अकुलाये हैं सब॥
काँ! काँ! कैसे बोल रहे हैं।
सारे घर में डोल रहे हैं॥
कौआ कोयल दोनों काले।
दोनों नभ में उड़ने वाले॥
पर न समझ में मेरे आती।
कोयल ही क्यों तुझको भाती?
फलता है जब आम हमारा।
बहती है जब रस की धारा॥
कोयल तब कू! कू! कर आती।
फल झड़ते ही पर न लखाती॥
उसको है निज मतलब प्यारा।
कभी न करती ध्यान हमारा॥

घर में कभी न आई मेरे।
सदा लगाती बन में फेरे॥

पर, लख तो कौवा बेचारा।
देता हर दम साथ हमारा॥
जब हम उठ आँगन में आते।
इसको छत पर बैठा पाते॥

जब फिर हम पढ़ने जाते हैं।
इसे मदरसे में पाते हैं॥
मिलता वहीं जहाँ हम जाते।
घर घर इसे फुदकता पाते॥

जाड़ा गर्मी वर्षा सब दिन।
ओझल होता नहीं एक दिन॥
यहीं भीगता सर्दी खाता।
हमें छोड़ कर अन्य न जाता॥

इसे देश अपना प्यारा है।
जाति प्रेम भी अति न्यारा है॥
यही पाठ यह हमें पढ़ाता।
फिर क्यों नहीं किसी को भाता॥

बोली नहीं सुरीली इसकी।
चाल नहीं चटकीली इसकी॥
इससे बुरा कहे जा इसको।
महा मूर्ख मैं समझूँ उसको॥

है जो मीठी बोली वाला।
दुष्ट वही होता है आला॥
माँ! वह कैसी मीठी बोली?
जिसमें विष की पुड़िया घोली॥

इससे तो कटु भाषा वाला।
कहीं श्रेष्ठ है कौवा काला॥
ला! ला! ला! ला! रोटी ला! ला!
बहुत आ गये कौवे, ला! ला!

इनको आज खिलाऊँगा मैं।
कुछ को पकड़ जिलाऊँगा मैं॥
साथ इन्हीं के खाऊँगा मैं।
खेलूँगा सुख पाऊँगा मैं॥

कोयल

किसको गीत सुनाती है तू ?
मन किसका बहलाती है तू ?
कोयल ! किसे बुलाती है तू ?
इधर उधर चिल्लाती कू ! कू !

किसको ढूँढ रही है प्यारी ?
कुछ तो बतला राजदुलारी !
धिक, तेरा वह साथी कैसा ?
छिप जो तुझे खिझाता ऐसा ॥

मुझको उसका नाम बता दे ।
क्या करता है काम बता दे ।
उसका पता लगाऊँगा मैं ।
तुझसे उसे मिलाऊँगा मैं ॥

गीत निराला गाती है तू ।
मुझे बहुत ही भाती है तू ॥
बना रहूँ नित तेरा चेरा ।
यही चाहता है मन मेरा ॥

कू ! कू ! करना मुझे सिखा दे ।
अपने घर की राह बता दे ॥

शाम सबेरे आऊँगा मैं ।
खेलूँगा सुख पाऊँगा मैं ॥

रहती तू न सदैव यहाँ है ।
तेरा असली देश कहाँ है ?

किसने तुझे सिखाया गाना ?
इधर उधर फिरना मनमाना ॥

नई पत्तियों की बुन चादर ।
जब वसन्त आमों को सादर ॥

पहना कर बौरा देता है ।
तेरा भी मन हर लेता है ॥

तभी कदाचित आती है तू ।
गीत प्रेम के गाती है तू ॥

सब का मन बहलाती है तू ।
करती फिरती कू ! कू ! कू ! कू !

यद्यपि तेरी सूरत काली
फिर भी बोली बोल निराली ॥
सब ऐबों से बच जाती है।
नहीं कुरूपा कहलाती है ॥

आ प्यारी! गोदी में आ जा।
कू! कू! कर कानों में गा जा ॥
मैं भी मधुर वचन बोलूँगा।
जब जब अपना मुँह खोलूँगा ॥

——

तोता

सीताराम नाम है इसका।
रटना यही काम है इसका ॥
माँ! कैसे पाला यह तोता?
पिंजड़े में डाला यह तोता?

सूरत इसकी भोली भाली।
बोली इसकी बड़ी निराली ॥
नहीं किसी को दुख पहुँचाता।
इसीलिये क्या आदर पाता?

अब यह पिँजड़े का राजा है।
मुझसे नित सुनता बाजा है ॥
और नाम ले लेकर मेरा।
सदा मुझे करता है टेरा ॥

जब कोई घर में आता है।
तो यह यों कह चिल्लाता है ॥
आओ भाई! आओ भाई!
अपना नाम बताओ भाई!

पढ़ता ही रहता है सब दिन।
पर न पाँच तक भी सकता गिन ॥
उसका गणित सीखना कैसा?
जिसे नहीं गिनना है पैसा ॥

यह अखरोट तोड़ लेता है।
यह बादाम फोड़ लेता है ॥
मेवे सभी उड़ाता है यह।
मिर्च चाव से खाता है यह ॥

माता ! मुझे बना दो तोता।
शौक बड़ा उड़ने का होता॥
पर न चाहिये पिँजड़ा तेरा।
पेड़ों पर डालूँगा डेरा॥

ताजे ताजे फल खाऊँगा।
चिड़ियों में चूँ चूँ गाऊँगा॥
मुझे पकड़ने जो आवेगा।
मार चोंच की वह खावेगा॥

मोर

मोर मनोहर सूरत तेरी।
चुरा रही है आँखें मेरी॥
ऐसा रूप कहाँ से लाया ?
ऐसा रंग कहाँ से पाया ?

नदी किनारे है जो टीला।
वहाँ किया करता क्या लीला ?
आ मेरी बगिया में आ जा।
कीयू कीयू शोर सुना जा॥

औ' यह गान सिखा दे प्यारे !
अपना नाच दिखा दे प्यारे !
ऐसे हैं न गगन में तारे।
जैसे है तू दुम में धारे॥

जो बादल है जल बरसाता।
जो है अन्न और फलदाता॥
वह है तुझे बहुत ही भाता।
उसको देख नाचता गाता॥

जन को पर जो साँप सताता।
तू है मित्र उसे खा जाता॥
यह लख नीति निराली तेरी।
यही समझ में आता मेरी॥

जो सज्जन परोपकारी हैं।
वे आदर के अधिकारी हैं॥
पर जो हैं खल पापी दुर्जन।
हम हों उनके पूरे दुश्मन॥

कबूतर

बैठा बैठा घर के ऊपर।
क्या करता है बता कबूतर ?

आ मेरे शिशुके ढिग आ जा।
जो तुझको भावे सो खा जा ॥

यहाँ न पूसी आने पाती।
आ जाती तो डंडे खाती ॥

इससे तू भय कर न किसी का।
मेरे घर में डर न किसी का ॥

सोने की पैंजनी अनोखी।
गढ़वा दूँगी तुझको चोखी ॥

रुन-झुन रुन-झुन उसे बजाना।
गुटरूँ गूँ कर गाना गाना ॥

मेरा राजदुलारा बेटा।
मेरा हँसता प्यारा बेटा ॥

चावल तुझे चुगावेगा अति।
तेरे पीछे धावेगा अति ॥

यदि हो कोई राजकुमारी।
दुनियाँ में सब से सुकुमारी ॥

तो इस बेटे से बतलाना।
इसके राजदूत बन जाना ॥

जब आवेगी बहू हमारी।
इस बेटे की दुलहिन प्यारी ॥

तो मैं इसकी न्यारी माता।
दूँगी तुझको कंठी छाता ॥

गो माता

क्यों उदास मुख खड़ी हुई हो,
बतलाओ तो गो माता ?
किस चिन्ता में गड़ी हुई हो,
बतलाओ तो गो माता ?

हड्डी हड्डी दिखलाती है,
आज तुम्हारी गो माता !
क्यों न हँसी तुमको आती है,
आज हमारी गो माता ?

नहीं पेट भर पाती हो क्या,
घास पात भी गो माता ?
भूखी ही रह जाती हो क्या,
रात रात भर गो माता ?

बैल तुम्हारे पूत उगाते,
खेती बारी गो माता !
जिसके बिना न हम जो पाते,
हरगिज प्यारी गो माता !

दूध दही घी और मलाई,
तुम देती हो गो माता !
भार हमारी सदा भलाई,
का लेती हो गो माता !

पाती हो न पेट भर चारा,
अगर हमारी गो माता !
तो भारी अपराध हमारा,
है यह प्यारी गो माता !

ईश्वर हममें बल दे सेवा,
करें तुम्हारी गो माता !
इसमें ही हैं सारे मेवा,
धरें यही चित गो माता !

माताएँ हैं तीन हमारे,
अम्मा, पृथ्वी, गो माता !
इन तीनों के बिना सहारे,
जुड़े न और नेह नाता ॥

बछड़ा

बहुत बड़ा है मेरा बछड़ा।
पीता है जल रोज दो घड़ा ॥
हरी हरी घासें खाता है।
साँझ सबेरे चिल्लाता है ॥

गैया के सँग चरने जाता।
दूध नहीं अब पीने पाता ॥
पर न जरा है बुरा मानता।
मानों कुछ भी नहीं जानता ॥

साथ हमारे खेला करता ।
सिर से हमको ठेला करता ॥
पर न लड़कियों को है भाता ।
शायद उनकी गुड़िया खाता ॥

मेरा घर उसका भी घर है ।
पर न मिला उसको बिस्तर है ॥
है जमीन ही पर नित सोता ।
नहीं चटाई को भी रोता ॥

शायद इसे न पढ़ना आता ।
इसीलिये कुछ मान न पाता ॥
पर इसकी परवाह न इसको ।
मान आन की चाह न इसको ॥

और बड़ा जब हो जावेगा ।
खेत जोतने यह जावेगा ॥
काम करेगा फिर तन रहते ।
वर्षा शीत घाम सब सहते ॥

जो कुछ हैं हम पीते खाते ।
इसकी ही मेहनत से पाते ॥
है मेरा यह सच्चा साथी ।
देकर इसे न लूँगा हाथी ॥

———

कुत्ता

कुर कुर कुर कुर कुत्ता आ जा ।
तुझे बनाऊँगा मैं राजा ॥
कुरसी एक उठा लाऊँगा ।
उस पर तुझको बैठाऊँगा ॥

वह होगी सिंहासन प्यारे !
और सिपाही लड़के सारे ॥
कागज की टोपी का भारी ।
मुकुट बना दूँगा सुखकारी ॥

छोड़ा बड़ा लँगोट किसी का ।
फटा पुराना कोट किसी का ॥
पहनावेंगे तुझको लड़के ।
बहलावेंगे तुझको लड़के ॥

जो जंजीर गले में आला।
वह ही होगी तेरी माला॥
राजतिलक मैं दूँगा तुझको।
औ' कुत्तेश कहूँगा तुझको॥

तेरा ब्याह करावेंगे फिर।
कुतिया कोई लावेंगे फिर॥
देख उसे पर मत गुर्राना।
नहीं पड़ेगा धोखा खाना॥

वह भी दौड़ेगी गुर्राकर।
भागेंगे लड़के भय खाकर॥
टूटी कुरसी उलट जायगी।
किस्मत तेरी पलट जायगी॥

बिल्ली

मेरे घर जो आती बिल्ली।
चो, बड़ी चिबिल्ली॥
जाने निकल कहाँ से आती।
सम्मुख धरा दूध पी जाती॥

दौड़ दौड़ हैं सब थक जाते।
कोई उसको पकड़ न पाते॥
इस घर से जाती उस घर में।
ओझल हो जाती दम भर में॥

दूध दही सब जूठा करती।
नहीं किसी से है वह डरती॥
चुपके चुपके आती जाती।
पकड़ पकड़ चूहों को खाती॥

जब जब उसे बुलाता हूँ मैं।
दूध दही दिखलाता हूँ मैं॥
तब तब म्याऊँ म्याऊँ करती।
किन्तु निकट आने से डरती॥

अति उत्पात मचाती है वह।
सबको नाच नचाती है वह॥
जायेगी यदि पकड़ चिबिल्ली।
अम्मा भिजवा देंगी दिल्ली॥

घोड़ा

चाचा की यह छड़ी नहीं है,
है यह मेरा घोड़ा।
जी चाहे तो तुम भी इस पर,
चढ़ सकते हो थोड़ा॥

भूसा चारा दाना पानी,
एक न पीता खाता।
छोड़ मदरसा और गाँव में,
सभी जगह है जाता॥

चाची को जब लखता है,
तब है अति दौड़ लगाता।
पर चाचा को देख जहाँ का,
तहाँ खड़ा रह जाता॥

होती है घुड़दौड़ जहाँ पर,
आज वहीं है जाना।
इस घोड़े की करामात,
है दुनिया को दिखलाना॥

हटो, हटो, मत अड़ो राह में,
कहना मानो लल्ला!
नहीं लात लग जायेगी,
तो होगा नाहक हल्ला॥

हाथी

लिये सूँड़ में सीढ़ी अपनी,
देखो हाथी आता है।
डरावनी है सूरत पर यह,
सचमुच नहीं डराता है॥

घिरी घटा सी चलता है,
क्या चाल अनोखी मनहारी।
है इसके सम नहीं दूसरा,
थल में और जीवधारी॥

यदि तुम इस पर चढ़ना चाहो,
अभी बैठ यह जावेगा।
लिये सूँड़ में जो सीढ़ी है,
तन पर वही लगावेगा॥

जब तुम ऊपर जा पहुँचोगे,
पुनः खड़ा हो जावेगा।
और महावत को देगा,
या सीढ़ी स्वयं उठावेगा॥

चिह्न राह में चक्की के से,
इसके पैर बनाते हैं।
सूप की तरह हिलते इसके,
दोनों कान दिखाते हैं॥

अजगर सी है सूँड़ निराली,
काले बादल सा तन है।
भाले से हैं दाँत इसी से,
देख सहम जाता मन है॥

किन्तु चाहता है बच्चों को,
भय न करो कुछ भी मन में।
उतना ही यह सीधा है,
जितना बल है इसके तन में॥

चली अगर हो तो न किसी को,
तुम्हें उचित है दुख देना।
इतने भारी हाथी से यह,
छोटी सी शिक्षा लेना॥

गदहा

गदहे की है अजब कहानी।
बोली है इसकी जापानी॥
शौक भी बड़ा है गाने का।
इस दुनिया में यश पाने का॥

पर न घड़ी अपने सङ्ग रखता।
जरा न असमय समय परखता॥
चिल्ला उठता है मनमाना।
सदा एक हीं गाता गाना॥

इससे नहीं किसी को भाता।
नही कहीं भी आदर पाता॥
लटकाए मुँह रहता हरदम।
नहीं उदासी होती कुछ कम॥

सिर्फ़ सुरीली बोली के बिन।
अपमानित होता है छिन छिन॥
और समझ के बिना विधाता!
जाता जहाँ वहीं पिट जाता॥

ऐसे ही जो लड़के होते।
नासमझी का बोझा ढोते॥
वे भी गदहे कहलाते हैं।
कहीं नहीं आदर पाते हैं॥

भालू

ओहो! आया भालू काला।
लम्बे लम्बे बालों वाला॥
जुटे मुहल्ले भर के लड़के।
भय है मेरी भैंस न भड़के॥

लिये मदारी था जो झोला।
उसे भूमि पर धर कर बोला—
अपना नाच दिखा दे भालू!
पाएगा तू रोटी आलू॥

गाया उसने—आ-या-या-या।
भालू को डंडा दिखलाया॥
और बजाया डमरू डम-डम।
लगा नाचने भालू छम-छम॥

नाचो भाई ऐसे! ऐसे!
कह कर लगा माँगने पैसे॥
भालू ने भी खूब हिलाया।
अपनी बालों वाली काया॥

पाई पैसे बरसे खन खन।
उन्हें जेब में रख कर फ़ौरन॥
हँसता आगे बढ़ा मदारी।
भीड़ लिये लड़कों की भारी॥

हैं जो अध्यापक चिल्लाते—
आह! न लड़के पढ़ने आते॥
वे भी भालू अगर नचावें।
तो न मदरसा सूना पावें॥

बन्दर

डाली पर क्या करता बन्दर ?
आ जा मेरे घर के अन्दर ।।
चालाकी न दिखा चितवन में ।
अपना मुख लख जा दर्पन में ।।

कर ले ध्यान नहा कर थोड़ा ।
पूजा से क्यों है मुख मोड़ा ?
और करेगा यदि नादानी ।
तो न कहायेगा तू ज्ञानी ।।

घुड़की तेरी जान गये हम ।
तुझको अब पहचान गये हम ।।
यदि अब भी तू दूर रहेगा ।
अपने मद में चूर रहेगा ।।

तो न चने हमसे पाएगा ।
नाहक भूखा रह जाएगा ।।
बुला रहे हैं—अ अज्ञानी !
बढ़ा न व्यर्थ अधिक हैरानी ।।

होली का है दिवस नहा ले ।
तन में सभी अबीर लगा ले ।।
देंगे हम तुझको पिचकारी ।
रङ्गभरी सोने की न्यारी ।।

उसे चलाना गीतें गाना ।
लड़कों में मिल धूम मचाना ।।
पर न किसी को दाँत दिखाना ।
नहीं पड़ेगा डंडा खाना ।।

गिलहरी

बीच राह में बैठ गिलहरी,
देखो तो क्या खाती है ।
भोली भाली सूरत इसकी,
मुझे बहुत ही भाती है ।।

उजले काले फूले फाले,
रोएँ कैसे सुन्दर हैं ।
बिल्कुल बच्चों के समान इस
के भी दो छोटे कर हैं ।।

चुपके चुपके चल कर आओ,
देखें तो क्या खाती है।
ओहो! यह तो सरसर सरसर
भगी पेड़ पर जाती है॥

उधर गई वह! उधर गई वह!
फुर्ती कैसी दिखलाती!
फुर्ती ही के कारण है यह,
मनमाना फिरती खाती॥

गिरगिट

वह बबूल पर चढ़ा हुआ है,
देखो तो गिरगिट कैसा!
रङ्ग बदल देगा यह अपना,
रगड़ो पैसे पर पैसा॥

देखो अभी लाल था बिल्कुल,
छिन में पर होगा काला।
अगर फूल होता तो इसकी
लोग बना लेते माला॥

हिला हिला कर गर्दन मानों,
यही सोचता रहता है।
अपने को दुनिया की सब,
चीजों से उत्तम कहता है॥

किन्तु कहूँगा मैं अभिमानी,
समय व्यर्थ निज खोता है।
क्योंकि न कोई भी लड़का,
गिरगिट होने को रोता है॥

चूहा

बैठे बैठे दिन भर बिल में।
क्या सोचा करते हो दिल में?
चूहे जी बाहर तो आओ।
कोई अपनी कथा सुनाओ॥

कुतर नई गुड़ियों की धोती।
किस लड़की को छोड़ा रोती?
किस लड़के की पुस्तक सुन्दर
काट छिपे हो बिल के अन्दर?

किसके तुमने चने चबाये ?
किसके तुमने चावल खाये ?

किसका तुमने घी पी डाला ?
चुरा ले गये किसकी माला ?

कितने जूठे बरतन चाटे ?
किये कहाँ तक सैर सपाटे ?

कितनी चतुर बिल्लियों से बच।
आए हो बतलाना सच सच ?

दाँत बने हैं तेज तुम्हारे।
ये चोखे हथियार तुम्हारे ॥

इनके ही बल हो मनमाना।
तुम खोदा करते बिल नाना ॥

पर दुम है कुछ काम न देती।
उल्टा जान तुम्हारी लेती ॥

पकड़ उसे यदि कौवे पाते।
तुम्हें उठा ले जाते खाते ॥

करके किसकी नकल निराली !
तुमने ऐसी दुम लगवा ली ?

कुछ तो चूँ ! चूँ ! बोलो प्यारे !
छिपे हुये हो क्यों मन मारे ?

मेंढक

टर्र ! टर्र ! टर्र !
आँधी आई बादल उमड़े, पानी बरसा घोर।
लल्लू ने उठ सुना सबेरे, बड़े जोर का शोर ॥
टरटों ! टर्र ! टर्र ! टर्र !
हा ! हा ! अम्मा ! टरटों टरटों ! आज पुकारे कौन ?
वही अभी तक छिपा रहा जो मिट्टी में हो मौन ॥
टरटों ! टर्र टर्र ! टर्र !
कर सकता था जो न चूँ तलक, उसकी यह आवाज।
ओछे जन पा साथ बड़ों का—यों ही करते नाज ॥
टरटों ! टर्र ! टर्र ! टर्र !
वर्षा जरा बीत जाने दो, तब फिर देना ध्यान।
सब टर्राना छोड़ मियाँ का, होगा कबर पर्यान
टरटों ! टर्र ! टर्र ! टर्र !

तितली

आओ ! तितली रानी ! आओ !
नहीं दूर से चित्त चुराओ ॥
उँगली पर बैठाऊँ तुमको ।
जहाँ कहो पहुँचाऊँ तुमको ॥

तुम सी सुन्दर औ' सुकुमारी ।
देखी मैंने और न नारी ॥
कोमल पंख मनोहर ऐसे ।
ईश बना लेते हैं कैसे ?

तिनके के ऊपर सोती हो ।
ओस कणों से मुँह धोती हो ॥
महक फूल की पीती हो तुम ।
इतने ही से जीती हो तुम ।

महलों की परवाह नहीं है ।
धन दौलत की चाह नहीं है ॥
पहने एक निराली साड़ी ।
फिरती हो तुम झाड़ी झाड़ी ॥

किसे ढूँढती हो बतलाओ ?
आओ ! कानों में कह जाओ ॥
क्या जिस प्रभु ने तुम्हें बनाया ।
उसका अब तक पता न पाया ?

हे फूलों की नई कुमारी !
देख तुम्हारी सूरत प्यारी ॥
यह आता है मेरे मन में ।
मैं भी बसूँ किसी उपवन में ॥

मकड़ी

मकड़ी देवी नाम हमारा ,
तनना बुनना काम हमारा
बिन चर्खे के बिना रुई के ,
सूत कातती हूँ मैं न्यारा ॥
बिन दीवालों का घर मेरा ,
लगा हवा पर बिस्तर मेरा ।
गाँव गली क्या जङ्गल झाड़ी,
देखा है सब दर दर मेरा ॥

चारु चन्द्रमा आ नभ ऊपर,
चाँदी से रँगता मेरा घर।
किन्तु सूर्य्य जब करता फेरा,
देता इसे सुनहला है कर ॥

सुघड़ पालने पर हूँ लेटी,
बड़ी चतुर माँ की हूँ बेटी।
आज तुम्हें दूँगी मैं बुनकर,
अति महीन तारों की पेटी ॥

जब न विदेशी थे व्यापारी,
औ' भारत के सब नर नारी
सूत कातते थे महीन अति,
तो होती थी कदर हमारी ॥

लोग मुझे करते थे पाला,
लखते मेरा पतला जाला।
चर्खे चला चला वैसा ही,
करते थे अति सूत निकाला ॥

अब न मुझे मिलता है आदर,
जीती हूँ हाँ इस आशा पर।
शायद बच्चे होश सँभालें,
फिर से कातें सूत मनोहर ॥

चींटी

चींटी रानी ! चींटी रानी !
कितना तुम पीती हो पानी ?
कोई क्या न बना पैमाना ?
बड़ा कठिन अन्दाज लगाना ॥

खाना तुम कितना खाती हो ?
घण्टे में कितना जाती हो ?
कब जगती हो कब सोती हो ?
कब हँसती हो कब रोती हो ?

आओ ! अपना हाल बताओ।
लो इस उँगली पर चढ़ जाओ ॥
मुझे बहुत ही तुम भाती हो।
ठहरो, कहाँ भागी जाती हो !

काम रात दिन करती हो तुम।
नहीं किसी से डरती हो तुम॥
फिरती रहती हो मनमाना।
फिर फिर आना फिर फिर जाना॥

नौकर झाड़ू लगा लगाने।
मरीं हजारों इसी बहाने॥
कुचल पैर से कोई देता।
पर कुछ खबर न कोई लेता॥

बिल में यदि भर आया पानी।
हुई तुम्हारी अकथ कहानी॥
देखो तो ईश्वर की माया।
कैसा छोटा तुम्हें बनाया!

दो दो करके दाना दाना।
किया इकट्ठा बड़ा खजाना॥
छोटा बदन काम है भारी।
क्यों न आदमी बने भिखारी?

यदि लेकर इतना भारी तन।
बैठा रहे आलसी सा बन॥
धन्य! हमारी चींटी रानी!
बड़ी बहादुर बड़ी सयानी॥

लो लाया हूँ चींटी! खा लो।
मानों कहा, जरा सुस्ता लो॥
मेहनत का मीठा फल खाओ।
आओ! चींटी रानी! आओ!

मैं भी डट के काम करूँगा।
बहुत नहीं आराम करूँगा॥
आलस से कुछ काम न होगा।
बिना काम के नाम न होगा॥

आम

पके पके क्या आम रसीले!
लटक रहे हैं पीले पीले॥
बाँस बड़ा वह लाओ प्यारे!
जितने कहो तोड़ दूँ सारे॥

महक रहीं हैं दस दिशाएँ।
दौड़ रहीं हैं इत उत गाएँ॥
आम गिरा कोई पाती हैं।
तो फौरन चट कर जाती है॥

है यह बड़ा बगीचा सबसे।
जाने खड़ा हुआ है कब से!
चलती नेक न लू की माया॥
बड़ी घनी है इसकी छाया॥

वह देखो जो रखा घड़ा है।
उसका शीतल नीर बड़ा है॥
उससे थोड़ा पानी लाओ।
धो धो कर आमों को खाओ॥

नहीं किसी से कोई कम है।
सब मीठे अमृत के सम हैं॥
पर तुमको जो भावे खाओ।
कपड़ों में रस नहीं चुआओ॥

हहर हहर कर धूल उड़ाती।
अगर कभी है आँधी आती॥
बिछा आम हैं इतने जाते।
ठौर न हम रखने को पाते॥

जब गरजेगा नभ में बादल।
पृथ्वी पर कुछ बरसेगा जल॥
तब तुम दूना रस पाओगे।
यदि इन आमों को खाओगे॥

जिसमें आम सरीखा फल है।
जिसमें गङ्गा जी का जल है॥
उस भारत को शीश झुकाओ।
प्रभु से उसकी खैर मनाओ॥

जामुन

है जामुन क्या काली काली।
लसी हुई है डाली डाली॥
ठहरो ऊपर जाऊँगा मैं।
डालें पकड़ हिलाऊँगा मैं॥

बरस पड़ेंगी पट पट पट पट।
अच्छी अच्छी चिनना झटपट॥
चले चलेंगे नदी किनारे।
धो धो कर खाएँगे प्यारे॥

अलग छाँट कुछ लेनी होंगी।
घर चल माँ को देनी होंगी॥
क्योंकि जीभ जब दिखलाएँगे।
मुन्नी को हम ललचाएँगे॥

तो उदास उसका मुँह लखकर।
तुरत कहेगी माँ गुस्साकर॥
फौरन भगो बाग में जाओ।
बेटी को भी जामुन लाओ॥

अमरूद

अमरूदों की बड़ी बहार।
आओ बच्चो! चलें बजार॥
पैसे पैसे बिकते यार!
आने में पाओगे चार॥

नहीं छीलने का कुछ काम।
यों ही खाकर करो तमाम॥
ज्यादा नहीं फुलाना पेट।
मुँह में लेना नहीं लपेट॥

छुड़ा छुड़ा जाओगे खीज।
अलग न होंगे इसके बीज॥
खाओ सभी साथ ही साथ।
गन्दे करो न अपने हाथ॥

मिले परस्पर हैं सब अङ्ग।
डुलिया यहाँ फूट की तङ्ग॥
गूदा बीज रङ्ग रस छाल।
मिल सब मेल सिखाते लाल!

कैसा मीठा कैसा गोल!
हो सकता क्या इसका मोल?
तुम भी मीठी बोली बोल।
शरबत सा दो बच्चो! घोल॥

होता इसका छोटा पेड़।
चढ़ सकती यदि चाहे भेड़॥
चलो दिखावें इसका बाग।
पर न तोड़ कुछ जाना भाग॥

मेरी तो है ऐसी बान।
शीत काल में गंगा स्नान॥
करता पहुँच इलाहाबाद।
लेता अमरूदों का स्वाद॥

पुस्तक

बच्चो! देखो कागज की,
पुस्तक में है कैसी माया!
इसका सा साथी इस जग में,
कहीं नहीं मैंने पाया॥

खुलते ही यह बिन बोले,
बातें अनेक बतलाती है।
दुश्मन हो या दोस्त किसी,
से कुछ भी नहीं छिपाती है॥

प्रेम बढ़ाता जो इससे वह,
महा चतुर हो जाता है।
नहीं गुरू भी इतनी बातें,
इस प्रकार सिखलाता है॥

जिन विद्वानों के समीप तक,
पहुँच नहीं हम पाते हैं।
वे ही पुस्तक में हमको,
अपना दिल खोल दिखाते हैं॥

मरे हुए लोगों को भी,
हम पुस्तक में जीता पाते।
सुनते उनकी प्यारी बातें,
औ' अपना मन बहलाते॥

घर बैठे हम पुस्तक में कर,
सैर जगत की लेते हैं।
हुए हजारों वर्ष जिन्हें वे,
दृश्य दिखाई देते हैं॥

इसीलिये यह मैंने बच्चो !
है निज मन में अनुमाना।
पा जाने पर पुस्तक है कुछ,
शेष न रह जाता पाना ॥

इसीलिये कहता हूँ इसका,
सा न दूसरा है साथी।
पुस्तक पढ़ना छोड़ न चाहूँ—
गा चढ़ना हरगिज हाथी ॥

बिन पुस्तक के राजा होने,
भी न कहीं मैं तो जाऊँ।
चाह यही है मनचाही मैं,
पढ़ने को पुस्तक पाऊँ ॥

घड़ी

चलते ही हरदम रहते हैं।
जाने क्या टिक टिक कहते हैं ?
हैं ये पक्के अपनी धुनके।
अचरज कोई करे न सुन के ॥

करते हैं ये काम बड़े ही।
चलते रहते पड़े पड़े ही ॥
आओ चलें इन्हीं के साथ।
घड़ी के दोनों काले हाथ ॥

कल मैंने भी घड़ी मँगाई।
उसमें है जञ्जीर लगाई ॥
पड़ी जेब में बोल रही है।
समय हमारा तोल रही है ॥

काम समय पर करते हैं जब।
बाबू बन कर फिरते हैं तब ॥
हों न चित्त से न्यारे नाथ !
घड़ी के दोनों काले हाथ ॥

बन्दूक

अजब है मेरी यह बन्दूक।
न सकती कभी निशाना चूक ॥
मिला यह राजा से उपहार।
छड़ी कह देना कहीं न यार !

नाव

खाट बनी है नाव हमारी छड़ी बनी पतवार।
पार जिसे जाना हो आकर होवे शीघ्र सवार॥
बड़ी है मजेदार नैया।
रही जा नदी पार नैया॥

दो दो पैसे देने होंगे बात कहूँ मैं साफ़!
पर जो तुतला कर बोलेगा उसको है सब माफ़॥
यही है रोजगार भैया!
रही जा नदी पार नैया॥

दो दो कंकड़ देकर लड़के बोल उठे तत्काल।
यह लो खेवा, खोलो नैया, तानो भैया! पाल॥
खेवैया ने नैया खोला।
कहा सब ने बम बम भोला॥

उस नैया पर चढ़े मुझे हैं गये बहुत दिन बीत।
पर न खेवैया वाला अब तक भूला है यह गीत॥
बड़ी है मजेदार नैया।
रही जा नदी पार नैया॥

———

इक्का

खड़ खड़ करता आता इक्का।
गलियों में भी जाता इक्का॥
हिलता खूब हिलाता इक्का।
काहिल नहीं बनाता इक्का॥

लखो जरा इक्के का घोड़ा।
औ' इक्के वाले का कोड़ा॥
दोनों की है शान निराली।
दोनों की है बान निराली॥

जो बैठा है इक्के वाला।
उसका भी है ठाट निराला॥
जहाँ खड़ा होता है घोड़ा।
तड़ तड़ वहीं जमाता कोड़ा॥

जिसे न मिलती मोटर टमटम।
इक्का उसको करके छमछम॥
सभी जगह पहुँचा आता है।
सस्ते में ही मिल जाता है॥

———

रेल

झक झक करती धुआँ उड़ाती ।
वह आ रही रेल चिल्लाती ॥
टन टन टन टन घंटा बोला ।
जल्दी टिकट खरीदो भोला !

भीड़ हुई लोगों की भारी ।
जल्दी में हैं सब नर नारी ॥
देखो कहीं न रह जाएँ हम ।
केवल धक्का ही खाएँ हम ॥

अजी जेब में पुस्तक डालो ।
पहले निज असबाब सँभालो ॥
ओहो ! यह न लाल गाड़ी है ।
धोखा हुआ, माल गाड़ी है ॥

———

मोटर

आज बन गया हूँ मैं मोटर ।
हटो नहीं खाओगे ठोकर ॥

पों पों पों पों भागो यारो !
मेरा रस्ता त्यागो यारो !

दूर बहुत जाना है मुझको ।
फिर वापस आना है मुझको ॥

काम दौड़ना सरसर मेरा ।
दिर भर करता रहता फेरा ॥

जब आएगी रात अँधेरी ।
लखना भारी आंखें मेरी ॥

जिधर जिधर से निकलूँगा मैं ।
दिवस रात का कर दूँगा मैं ॥

———

हवाई जहाज

वह जा रहा जहाज हवाई।
बहुत दिनों में पड़ा दिखाई॥

भरता है कैसा भन्नाटा!
मानों पीस रहा है आटा॥

मालूम होता ऐसा छोटा।
हो मानों उड़ रहा लँगोटा॥

जो इसमें बैठे हैं भाई।
गुड़ियों से पड़ते दिखलाई॥

जल में तेज जहाज चलाया।
थल पर रेल आदि दौड़ाया॥

उड़ने का भी अवसर आया।
यह देखो मनुष्य की माया!

ढोल

भरी है इसमें पोल अतोल।

थपकी दो तुम धीरे धीरे सुनो मनोहर बोल॥
जोर करोगे चिल्लायेगा ढम ढम ढम ढम ढोल।
ठहरो इससे डर मत जाना, है यह निपट अबोल॥
केवल आडम्बर का ही है चढ़ा अनोखा खोल।
जरा गौर से देखो, इसकी खुल जावेगी पोल॥

मेरी छाया

Imaginative

अम्मा ने जब दीप जलाया।
मैंने देखी अपनी छाया॥
मुझ सी ही है सूरत सारी।
बहुत मुझे वह लगती प्यारी॥

जब जब मैं बिस्तर पर जाता।
उसे प्रथम ही लेटा पाता॥
उसको कुत्ते काट न सकते।
उसको दादा डाट न सकते॥

वह घटती बढ़ती मनमाना।
बना न कोई है पैमाना॥
साथ हमारा कभी न तजती।
जब मैं भगता वह भी भगती॥

एक रोज मैं उठा सबेरे।
रहा उसे आलस ही घेरे॥
खेतों में बिखरे थे मोती।
घर थी वह घर में ही सोती॥

पूरब में जब निकला सूरज।
वह भी आ पहुँची बिस्तर तज॥
उसे साथ ले आया घर में।
उस सा मित्र न दुनियां भर में॥

सपना

जो सब को प्यारे होते हैं।
भले काम कर के सोते हैं॥
वे सुन्दर लखते हैं सपना।
हो मानों सारा जग अपना॥

बागों में वे दौड़ लगाते।
नदियों में सानन्द नहाते॥

चिड़ियाँ उनको गीत सुनातीं।
तरु शाखायें उन्हें झुलातीं॥

लखते पृथ्वी की हरियाली।
फूलों की मनमोहन लाली॥

पलकों पर बैठी मतवाली।
पहरा देती नींद निराली॥

सुख से वे सोते मनमाना।
सपने उन्हें सुनाते गाना॥

जगने पर भी सुख पाते वे।
अच्छे लड़के कहलाते वे॥

पर जो करते सदा लड़ाई।
प्रिय न किसी को होते भाई!

वे भयावना लखते सपना।
हो मानों जग दुश्मन अपना॥

उन्हें बाग में साँप लखाते ।
डूब तुरत नदियों में जाते ॥
चिड़ियाँ उनको चोंच दिखातीं ।
तरु शाखायें उन्हें गिरातीं ॥
लखते पृथ्वी की हरियाली ।
मानों सोती डायन काली ॥
पलकों पर बैठी मतवाली ॥
दिल दहलाती नींद निराली ॥
नित्य चौंकते चिल्लाते वे ।
ओछे लड़के कहलाते वे ॥
कभी न सो पाते मनमाना ।
रोज उन्हें पड़ता पछताना ॥

पसीना

बड़ा दुष्ट तू अरे पसीना !
कठिन हो रहा मेरा जीना ॥
रोम रोम से निकला आता ।
पल पल पर मुझको नहलाता ।

पीता हूँ मैं ठंडा पानी ।
फिर भी तू करता शैतानी ॥
नहीं निकलता ठंडा तन से ।
कम न किसी भी तू दुश्मन से ॥

यदि गर्मी में नहीं सताता ।
जाड़े में मेरे ढिग आता ॥
तो मैं अति तेरे गुण गाता ।
तू भी सच्चा मित्र कहाता ॥

साथ समय पर जो न निभाता ।
बिना काम आकर लिपटाता ॥
बड़ा दुष्ट वह बड़ा कमीना ।
ज्यों गर्मी का कड़ा पसीना ॥

वर्षा की बहार

आसमान में उमड़े बादल,
पृथ्वी पर हरियाली है ।
नन्हीं के नन्हें हाथों में,
मेंहदी की नव लाली है ॥

लड़के सुख से झूल रहे हैं
कैसा झूला डाला है।
हर हर करता बड़े जोर से
नीचे बहता नाला है॥
घर में पानी वन में पानी
पानी ही की माया है।
पानी पानी पैदल चलना
मुन्नू को भी भाया है॥
लम्बी लम्बी पतली पतली
घास हवा पर हिलती हैं।
उन पर पड़ पानी की बूँदें
नव मोती सी खिलती हैं॥
लो फिर पानी लगा बरसने
जल्दी घर को भागो यार!
छत पर देखो, मुन्नी भी अब
अपनी गुड़ियाँ रही सँभार॥
गली गली से देखो कैसी
वही विकट पानी की धार।
आज न हम पढ़ने जायेंगे
आती वहाँ बड़ी बौछार॥

सोचो तो जी ईश्वर ने क्या
वर्षा खूब बनाई है!
उसकी सारी सृष्टी की बस
छिपी यहीं चतुराई है॥
पृथ्वी ने यह हरियाली सब
वर्षा द्वारा पाई है।
वर्षा ही से बरस रही
ईश्वर की बड़ी बड़ाई है॥
अन्न इसी से पैदा होता
यही किसानों का जीवन।
सच पूछो तो केवल वर्षा
ही है इस भारत का धन॥
आओ शिशुओ, हाथ जोड़
वर्षा को हम सब करें प्रणाम।
क्योंकि उसी से प्राप्त हुए हैं
हमको खेल और आराम॥

गुड़ियों का घर

गुड़ियों का घर बना हुआ है चमकदार चटकीला।
सुनो ज़रा तो बतलाती हूँ कैसा रंगरँगीला!

विविध रँगों से रँगा हुआ है हरा लाल औ' पीला।
कहीं गुलाबी कहीं बैंगनी और कहीं है नीला॥
हैं किवाड़ सोने के उसमें चौखट उसकी चाँदी।
भीतर रहती गुड़िया रानी बाहर उसकी बाँदी॥
अति चमकीले रंगरँगीले आँखों का सुखकारी।
खिड़की औ' दरवाजों में हैं सुन्दर शीशे भारी॥
भाँति भाँति के चित्र टँगे हैं भीतर उसके भाई!
साथ हमारे मेला जाकर गुड़िया थी जो लाई॥
छोटी खाटें छोटे गद्दे छोटे बर्तन भाँडे।
सभी तरह की चीजें छोटी छोटी हाँडी हाँडे॥
बाहर से है हुई सफेदी भीतर रंगरँगीला।
इसी भाँति है सजा सजाया सारा घर भड़कीला॥
गुड़ियाँ सारी बड़ी दुलारी रहतीं हर्षित भाई!
लड़तीं और झगड़तीं यदि वे आ पड़ती कठिनाई॥
यदि मैं भी गुड़िया ही होती इस घर में घुस जाती।
साथ उन्हीं के रहती दिन भर कभी न बाहर आती॥

खिलौना

एक खिलौना घर से इकला।
सैर जगत की करने निकला॥
छाया मिली—उसे चमकाया।
देखा दुःख—उसे छलकाया॥

मिली उदासी उसको खोला।
उसमें थोड़ा मीठा घोला॥
क्रोधी मिला उसे दिखलाया।
जो था उसमें दोष समाया॥

भेंट किया रोते नैनों से।
भरा उन्हें सुख के सैनों से॥
देख लखा दुखी मुख, उसमें छोड़ा।
मीठा एक हँसी का रोड़ा॥

कोई दुखिया मिला अकेला।
साथ उसी के क्षण भर खेला॥
बड़े बड़े कामों का निकला।
चला खिलौना जो था इकला॥

महावीरे

माथ पर मत हाथ रक्खो हर घड़ी।
है अजब औंधी तुम्हारी खोपड़ी॥
खींचते हो बाल की भी खाल क्यों?
और करते आंख हो यों लाल क्यों?
कान मेरी बात को देते अगर।
आंख नीची कर बिदा लेते अगर॥
तो न सिर पर आज पर्वत टूटता।
इस बुराई का न भण्डा फूटता॥
नाक में दम आप अपने कर लिया।
अब सदा को हाथ उससे धो लिया॥
है रहा देखो कलेजा कांप सा।
लोट सीने पर गया है सांप सा॥
आंख किससे जा अचानक लड़ गई?
ढोल यह कैसी गले में पड़ गई!
मूँछ क्या अब सर्वदा को मुड़ गई?
हाथ में आई भी चिड़िया उड़ गई॥
अब फुलाते गाल हो किसके लिये?
पीठ पीछे ध्यान हैं किसने दिये?
पेट ही में बात यह रहते धरे।

बैर होगा पीटने से क्या हरे?
है समय कस कर कमर तैयार हो।
मुँह न बाओ इस तरह लाचार हो॥
सूखती है जान तो थे किसलिये।
सांप के मुँह में बढ़ा अँगुली दिये!

तीनों बहिनें

बड़ी खिलाड़ी तीनों बहिनें।
तीनों बहिनें तीनों बहिनें।
बड़ी खिलाड़ी तीनों बहिनें॥

* * *

एक बन गई घोड़ागाड़ी और दूसरी रेल।
और तीसरी ऊँट बन गई लटकी नाक नकेल॥
खेल मजे में खेल मेल से तीनों बहिनें।
तीनों बहिनें तीनों बहिनें,
बड़ी खिलाड़ी तीनों बहिनें॥

× × ×

एक बन गई सूरज सुन्दर बनी दूसरी तारा।
बनी तीसरी चन्दामामा जो है सब से प्यारा॥

गुड़ियों का खुला पिटारा।
तीनों बहिनें तीनों बहिनें,
लगीं खेलने तीनों बहिनें॥

छुट्टी

छुट्टी! छुट्टी! छुट्टी!
टन! टन! टन! टन! घण्टा बोला।
हो! हो! हो! चिल्लाया भोला॥
बन्द करो, क्यों बस्ता खोला?
छुट्टी! छुट्टी! छुट्टी!
आओ बगल दबाएँ बस्ता।
जल्दी घर का पकड़ें रस्ता॥
खावें चलें कचौड़ी खस्ता।
छुट्टी! छुट्टी! छुट्टी!
पढ़ने का था समय पढ़े जब।
खेल कूद में नहीं पड़े तब॥
बुरा नहीं यदि हम खेलें अब।
छुट्टी! छुट्टी! छुट्टी!

मंगवा छाता!

descriptive

डाली डाली—
की हरियाली—
का न रहा वह साज।
विकल बड़ी है,
गिरी पड़ी है,
सूखी पत्ती आज॥
मोटे कपड़े,
तन को जकड़े,
करते हैं हैरान।
जरा न भाते,
अति गरमाते,
खाए लेते जान॥
राह बड़ी है,
धूप कड़ी है,
उड़ती है अति धूल।
जल्दी माता,
मँगवा छाता,
जाना मुझको स्कूल॥

एक सवाल

आओ, पूछें एक सवाल।
मेरे सिर में कितने बाल?
कितने आसमान में तारे?
बतलाओ या कह दो हारे॥

नदियां क्यों बहतीं दिन रात?
चिड़ियां क्या करती हैं बात?
क्यों कुत्ता बिल्ली पर धावे?
बिल्ली क्यों चूहे को खावे?

फूल कहां से पाते रङ्ग?
रहते क्यों न जीव सब सङ्ग?
बादल क्यों बरसाते पानी?
लड़के क्यों करते शैतानी?

नानी की क्यों सिकुड़ी खाल?
अजी न ऐसा करो सवाल!
यह सब ईश्वर की माया है।
इसको कौन जान पाया है!

बाबा की दाढ़ी

बाबा! दाढ़ी देख तुम्हारी,
खुशी मुझे होती है भारी।
इसे कहाँ से लाये हो तुम,
किसकी है यह राजदुलारी?

मुझे बहुत ही भाती है यह,
मन मेरा बहलाती है यह।
और गुदगुदा कर गालों पर,
हरदम मुझे हँसाती है यह॥

हँसती है यदि इसको छू लूँ,
कहो किस तरह इसको भूलूँ?
फिर तुम क्यों बिगड़ोगे बाबा!
यदि इसके सँग मैं भी झूलूँ?

लड्डू इसे न लाऊँगा मैं,
रोटी नहीं खिलाऊँगा मैं।
दाँत बहुत पतले हैं इसके,
शरबत जरा पिलाऊँगा मैं॥

यदि यह मेरे मुँह पर होती,
अपने दुःख सुख मुझसे रोती।
तो मैं इसमें गुँथवा देता,
अम्मा के हारों के मोती॥
पर न इसे परवाह किसी की,
और न कुछ भी चाह किसी की।
जो होते हैं सच्चे लड़के,
वे चलते हैं राह इसी की॥

पकड़ चाँद को यदि मैं पाता !

पकड़ चाँद को यदि मैं पाता !
आसमान की ओर दिखाता।
लख तारों का मन ललचाता॥
पास हमारे आते ज्यो ज्यों उन्हें पकड़ता जाता।
फिर मैं एक अनोखी आला।
गुहता उन तारों की माला॥
सब के नीचे उसी चन्द्रमा को गुह कर लटकाता !

उसे छिपा कर रखता दिन में।
रगड़ रगड़ धोता छिन छिन में॥
मैल चन्द्रमा का मिट जाता चकाचौंध हो जाता।
होती शाम रात जब आती।
अन्धकार की बदली छाती॥
चुपके से वह हार पहिन मैं बेहद धूम मचाता।
अम्मा मुझे देख घबराती।
मुन्नी मेरे पास न आती॥
तरह तरह की बोल बोलियाँ सब को खूब छकाता।
अगर जान वे मुझको पाते।
मिलकर तुरत पकड़ने आते॥
हार उतार जेब में रखता अन्धकार हो जाता।
फिर जो मेरा कहना करता।
मुझसे हर दम रहता डरता॥
कभी कभी उसको भी खुश हो हार वही पहनाता।

सुनहली और काली

चन्दा तारे, सभी सिधारे,
आसमान कर खाली।
हुआ सवेरा, मिटा अँधेरा,
पूरब छाई लाली॥

कहीं रुपहली, कहीं सुनहली,
तन ऊषा ने जाली।
दसों दिशा की, घोर निशा की,
सब कालिमा चुरा ली॥

पड़ी दिखाई, अति मन भाई,
लची फूल से डाली।
लगीं बोलने, वहीं डोलने,
उठ चिड़ियाँ मतवाली॥

ऊषा रानी, सुभग सयानी,
निकली ले दो थाली।
जगे हुओं को मिली सुनहली,
सुप्त पड़ों को काली॥

मेरा मन

Imaginative

कभी यहां है, कभी वहां है,
इसकी पकड़े कौन नकेल?
तेज रेलगाड़ी बन जाती,
चाल देख गुड़ियों का खेल॥

दिन में रात, रात में दिन का,
ध्यान इसे हो आता है।
जहां चाहता है मुझ से,
बे पूछे ही भग जाता है॥

जङ्गल इसमें आ जमते हैं,
नदियां इसमें बहती हैं।
चीं चीं करके चिड़ियां इसमें,
जाने क्या क्या कहती हैं!

मैं जब चाहूँ इसमें सूरज,
का गोला दिखलाता है।
धीरे धीरे वही चन्द्रमा,
का टुकड़ा हो जाता है॥

शकल दिखा कर भूतों की,
यह कभी डरा देता हमको।
कभी उन्हीं से लड़ने को,
तलवार धरा देता हमको॥

कभी हँसाता कभी रुलाता,
कभी खेलाता सब के साथ।
जो जो यह दिखला सकता है,
होता अगर हमारे हाथ॥

तो जमीन से आसमान तक,
सीढ़ी एक लगाते हम।
इन्द्रासन से हटा इन्द्र को,
अपना रङ्ग जमाते हम॥

पानी में हम आग लगाते,
बनता तेज हवा पर घर।
बिना मास्टर के पढ़ जाते,
सारी पुस्तक सर सर सर॥

अजी व्यर्थ की बातें छोड़ो,
इनमें क्या है कहो धरा।
खाते खाते मन के लड्डू,
नहीं किसी का पेट भरा॥

कौन लिखता है ?

सूरज डूबा लैंप जलाया हो आई कुछ रात,
नन्हीं मुन्नी दोनों बैठीं लेकर कलम दवात।
लगीं लिखने वे कुछ ज्योंही,
उठा उर प्रश्न यही त्योंही।
कलम, दवात, हाथ, या कागज लिखता इनमें कौन
इसी सोच में बड़ी देर तक बनी रहीं वे मौन।
बाद को मुन्नी यों बोली—
कलम ही लिखती है भोली!
नन्हीं बोली—अच्छा तो दवात को कर दो दूर,
देखो कैसे कलम लिखेगी जिसका तुम्हें गरूर।
चूर हो जाएगी सारी,
न लिख पाएगी बेचारी।

मुन्नी बोली तो लिखती हैं दोनों मिलकर साथ,
नन्हीं बोली अच्छा तो अब नहीं लगाना हाथ।

देखना लिखती हैं कैसे,
हाथ यदि दूर रहा उनसे।

थोड़ी देर सोचकर मुन्नी फिर बोली तत्काल,
तीनों मिलकर लिख सकते हैं भलाबुरा सब हाल।

हाथ कंगन को दर्पण क्या ?
अभी जो चाहो लो लिखवा।

हँसकर तुरत कहा मुन्नी ने—कागज रक्खो दूर।
इन तीनों को कर लेने दो बल अपना भर पूर।

लिखेंगे कहाँ बताओ जी ?
न मुझको यों फुसलाओ जी।

अच्छा चारों मिल जाने पर क्या न लिखेंगे नेक,
मुन्नी ने की इसी बात के दिखलाने की टेक।

लगी वह लिखने कुछ ज्योंही,
हिलाया नन्हीं ने त्योंही।

केश पकड़कर ताने उसके खूब दिया झकझोर,
छूटी कलम सियाही बिखरी चला न कुछ भी जोर।

कहा बतलाती भी जाओ,
साथ ही लिखती भी जाओ।

थी मुन्नी चालाक बड़ी ही कहा--हिलै नहिं गात,
मन भी लगा रहे लिखने में करो न तुम कुछ बात।

और हों चारों वे बातें,
बिताद्ूँ तो लिखते रातें।

इसके सिवा जिसे होवेगा जितना ज्यादा ज्ञान,
उतना ही उसका होवेगा जग में लेख महान।

हार अब नन्हीं ने मानी,
नीति यह दोनों ने जानी।

प्यारे शिशुओ ! उक्त कहानी का उर में रख ध्यान,
लिखो पढ़ोगे तो हो जाओगे तुम भी विद्वान।

न होगी कुछ भी कठिनाई,
भूलना मत इसको भाई।

———

मेरी माता

मेरी माता बड़ी निराली।
मुझको देख बजाती ताली॥
आँगन में दौड़ाती मुझको।
हँसती और हँसाती मुझको॥
जाती जहाँ मुझे ले जाती।
नये नये कपड़े पहनाती॥
खेल खिलौना खूब मँगाती।
और कहानी रोज सुनाती॥
मुझे सुलाती मुझे जगाती।
मुझे हिलाती मुझे झुलाती॥
मुझे खिलाती मुझे पिलाती।
छोड़ मुझे वह कहीं न जाती॥
उसका तन मेरा ही तन है।
उसका मन मेरा ही मन है॥
उसका कर मेरा ही कर है।
है वह तो न किसी का डर है॥
मेरा उसका नाता सच्चा।
मैं हूँ उसका प्यारा बच्चा॥

———

मातृहीन

मेरी माता! मेरी माता!
कहाँ गई तू मेरी माता?

आँखों के न सूखते आँसू।
तेरे बिन है रहा न जाता॥

थका खोज, कुछ पता न पाता।
बहुत बहुत हूँ मैं घबड़ाता॥

कैसे छोड़ गई तू अपने?
प्यारे शिशु को रोता गाता॥

मैं था लाल खिलौना तेरा।
छोटा सा मृग छौना तेरा॥
अब तू पास नहीं है तो माँ!
सूना है सिंहासन मेरा।

किसके बल पर अब अकड़ूँ मैं।
किसकी उँगली अब पकड़ूँ मैं॥

और सबेरे उठ कर किसके।
पैरों पर धर शीश पड़ूँ मैं॥

जड़ से जीवन का तरु टूटा ।
सारा हँसना गाना छूटा ॥

लूटा तेरा प्राण काल ने ।
क्योंकि भाग्य था मेरा फूटा ॥
किसके ढिग हा ! जाऊँ अब मैं ?
माँ, कह किसे बुलाऊं अब मै ?

नहीं बाताता है कोई भी ।
तुझको कैसे पाऊँ अब मैं ?
सेवा तेरी कर न सका मैं ।
पीड़ा तेरी हर न सका मैं ॥

कैसे तुझको पा सकता हूँ ?
जब तेरे सँग मर न सका मैं ॥
हाँ जो मेरी मातृ मही है ।
जिसमें तू ने शान्ति लही है ॥

सेवा कर उसकी सकता हूँ ।
आशा बाकी एक यही है ॥

मेरा मुन्नू

मेरा मुन्नू बड़ा दुलारा ।

अम्मा मेली दूदू मेला ।
गैया मेली बचला मेला ॥
जो लखता—कहता मेला है ।
ऐसा चल बल अल बेला है ॥

है न किसे प्राणों से प्यारा ।
मेरा मुन्नू बड़ा दुलारा ॥

सिंहासन है गोद हमारी ।
इस पर वारूँ दुनियाँ सारी ॥
इसी गोद का है वह राजा ।
कहता सबसे तू ! तू ! आ जा !

क्यों न कहूँ—"आखों का तारा ।"
मेरा मुन्नू बड़ा दुलारा ॥

मुन्नू राजा

क्या करता है मुन्नू राजा !
आ ! मेरी गोदी में आजा ॥
आजा प्यारे खा जा खाजा ।
और बजा जा ले यह बाजा ॥

बुला रही है अम्मा आजा ।
अरे ! कहाँ तू भला छिपा जा ॥
राजा को कहता है--लादा ।
बाजा को कहता है—बादा ॥

तेरी ऐसी बोली प्यारे ।
मेरे मुन्नू ! राज दुलारे !
मुझे बहुत लगती है प्यारी ।
सुन न किसे होता सुख भारी ॥

यही चाहता है मन मेरा ।
छिन छिन पर मुख चूमूँ तेरा ॥
सुन तो क्या कहते हैं दादा--
मुन्न लादा ! मुन्नू लादा !

सोजा बेटा !

सोजा बेटा ! सोजा !
करके नानी,
खतम कहानी,
भरते खुर्राटे मन मानी;
पहरा देती निद्रा रानी ।
सोजा बेटा ! सोजा !

* * *

सोजा प्यारे,
चन्द्र पधारे,
लगे चमकने नभ में तारे;
हैं ये सब तेरे रखवारे ।
सोजा ! बेटा ! सोजा !

* * *

बुरी बलाएँ—
पास न आएँ,
सुर कन्याएँ गीतें गाएँ;
अच्छे अच्छे स्वप्न दिखाएँ ।
सोजा बेटा ! सोजा !

मत

उल्लू को चाह अँधेरे की,
दीपक उसको दिखलाओ मत।
गदहा घूरे पर घूमेगा,
बागों में उसे बुलाओ मत ॥
क्या भैंस गीत का रस जाने,
उसके ढिग बीन बजाओ मत।
कौवे को चाट निबौरी की,
आमों पर उसे उड़ाओ मत ॥
गीदड़ न ठहर सकता रन में,
जयमाल उसे पहनाओ मत।
बिल्ली न निरामिश हो सकती।
उसके सिर तिलक लगाओ मत ॥
नहिं दुष्ट दुष्टता तज सकते,
है व्यर्थ उन्हें समझाओ मत।
हाँ, अगर चाह है उन्नति की,
मुँह उनको कभी लगाओ मत ॥

नहीं होगा !

जो तीर निशाना चूक चुका,
उसका कुछ मान नहीं होगा।
जिसको मुँह खाकर थूक चुका,
मुँह में वह पान नहीं होगा ॥
भूसी से जो हो गया अलग,
वह चावल धान नहीं होगा।
रण से जो गया सिपाही भग,
उसका गुण गान नहीं होगा।
जो बकरों की बलि करता है,
वह खुद बलिदान नहीं होगा ॥
जो शैतानी से डरता है,
वह ही शैतान नहीं होगा।
जो समझ बूझ कर बढ़ता है,
मग में हैरान नहीं होगा ॥
जो कभी न लिखता पढ़ता है,
हरगिज विद्वान नहीं होगा ॥

कभी न !

कभी न रो रो आँख फुलाना।
कभी न मन में क्रोध बढ़ाना॥
कभी न दिल से दया भुलाना।
कभी न सच्ची बात छिपाना॥
कभी न बातों में चिढ़ जाना।
कभी न दुष्टों से भय खाना॥
कभी न खाकर मित्र नहाना।
कभी न बासी खाना खाना॥
कभी न अति खा पेट फुलाना।
कभी न खाते ही सो जाना॥
कभी न पढ़ने से घबड़ाना।
कभी न तन में आलस लाना॥
कभी न करना जरा बहाना।
कभी न बढ़ने पर इतराना॥
कभी न मन में लालच लाना।
कभी न इतनी बात भुलाना॥

दोनों !

खड़े खड़े मत खाना बच्चो !
पड़े पड़े मत पढ़ना।
दोनों काम बैठ कर होते
ज्यों घोड़े का चढ़ना॥

हँस हँस कर मत पीना पानी
मत हँस हँस कर खाना।
दोनों में हिचकी आवेगी
होगा जीभ कटाना॥

खेल कूद में छल मत करना
छलियों में मत रहना।
दोनों बदनामी के घर हैं
ज्यों चोरी का गहना॥

लँगड़े को मत लँगड़ा कहना
काने को मत काना।
कहलाता है यही जले पर
जग में नमक लगाना॥

अपने ही दुख सुख के माफिक
सब का दुख सुख लखना।
नहीं उचित है कड़ुआ थू! कर
मीठा मीठा चखना॥

मोहन मेरा

मोहन मेरा, हुआ सवेरा।
करती ऊषा गान।
साथी तेरे, मिले न हेरे।
क्यों सोता अज्ञान?

ले ले कोड़ा, चढ़ चढ़ घोड़ा।
पहुँचे सब स्कूल।
एक न साथी, ऊँट न हाथी।
खेलेगा क्या धूल॥

सीखो!

फूलों से नित हँसना सीखो भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित सीखो शीश झुकाना॥
सीख हवा के झोकों से लो हिलना जगत हिलाना।
दूध तथा पानी से सीखो मिलना और मिलाना॥
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।
लता तथा पेड़ों से सीखो सब को गले लगाना॥
वर्षा की बूँदों से सीखो सब से प्रेम बढ़ाना।
मेंहदी से सीखो सब ही पर अपना रँग चढ़ाना॥
मछली से सीखो स्वदेश के लिये तड़पकर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो दुख में धीरज धरना॥
दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की सच्ची सेवा करना॥
जल-धारा से सीखो आगे जीवन पथ में बढ़ना
और धुँए से सीखो हर दम ऊँचे ही पर चढ़ना॥
सत्पुरुषों के जीवन से सीखो चरित्र निज गढ़ना।
तथा प्रेम से सीखो बच्चो! इन पद्यों का पढ़ना॥

मैं क्या चाहता हूं !

मैं चाहता हूँ एक दिन तलवार हो इस हाथ में ।
हों साथ ही मेरे सभी मजबूत साथी साथ में ॥
डङ्का बजा कर युद्ध का लूँ जीत सब संसार ही ।
लोग समझें हो गया श्री राम का अवतार ही ॥

फिर चाहता हूँ दूसरे दिन फूल हो इस हाथ में ।
हों साथ ही मेरे सभी सुकुमार साथी साथ में ॥
डङ्का बजा कर प्रेम का लूँ जीत सब संसार ही ।
लोग समझें हो गया श्री कृष्ण का अवतार ही ॥

फिर चाहता हूँ तीसरे दिन सूत हो इस हाथ में ।
हो एक चर्खे के सिवा साथी न कोई साथ में ॥
डंका स्वदेशी का बजे लखता रहे संसार ही ।
लोग समझें देश की सब दीनता है जा रही ॥

फिर चाहता हूँ अन्त में कुछ भी न हो इस हाथ में ॥
हों एक भी साथी तथा सङ्गी न मेरे साथ में ॥
है जो नहीं पड़ता दिखाई जा उसी से मैं मिलूँ ।
और फिर सबके दिलों में सत्यता बन कर खिलूँ ॥

इस तरह मैं चाहता हूँ कुछ न कुछ सब रोज ही ।
हा ! किन्तु सच्ची बात की पायी न कर कुछ खोज ही ।
चिन्ता बड़ी है बढ़ रही, हूँ सोचता दिन रात:मैं ।
अब बालको ! तुम ही कहो हूँ चाहता क्या बात मैं ?

अच्छा और बुरा लड़का

अच्छा लड़का कोयल का सा
मीठा बोल सुनाता है ।
किन्तु बुरा लड़का कौवे सा
काँव काँव चिल्लाता है ॥
अच्छा लड़का राजहंस सा
निर्मल जल में तरता है ।
किन्तु बुरा लड़का बगुलों सा
मछली मारा करता है ॥
अच्छा लड़का अन्धे को
अपनी उँगली पकड़ाता है ।
किन्तु बुरा बेचारे के
पीछे कुत्ते दौड़ाता है ॥
अच्छे लड़के की बोली मधु
मक्खी सी है मधु देती ।

किन्तु बुरे की बर्र की तरह
डंक मार पीड़ा देती ॥
अच्छा लड़का खुद हँसता है
और हँसाता है सब को।
किन्तु बुरा लड़का रोता है
और रुलाता है सबको ॥
इसीलिए अच्छा लड़का
दुनिया में आदर पाता है ॥
किन्तु बुरा लड़का अपने
घर में भी पीटा जाता है ॥

सदा !

सदा सबेरे उठने वाला होता फुर्तीला बलवान।
सदा सबेरे पढ़ने वाला होता चतुर तथा विद्वान ॥
सदा सबेरे सोने वाला होता है आलसी महान।
सदा सबेरे रोने वाला खिंचवाता है अपने कान ॥

नकली और असली

नकली आँखें बीस लगा ले,
अन्धा देख न सकता है।

मनों पोथियां बगल दबा ले,
मूरख लेख न सकता है ॥
लदे पीठ पर नित्य सरंगी,
गदहा राग न कह सकता।
चाहे जितना पान चबा ले,
भैंसो स्वाद न लह सकता ॥
नहीं चढ़ा कर कोरी कलई,
ताँबा बन सकता सोना।
नहीं मोर के पङ्ख पाकर,
कौवे का मिटता रोना ॥
नकल व्यर्थ की करता है जो,
सदा अन्त में रोता है।
बिना गुणों के नहीं जगत में,
मान किसी का होता है ॥

दिल्ली

दिल्ली की क्या कहें कहानी।
है यह नगरी बड़ी पुरानी ॥
बड़े बड़े सुख देखे इसने।
बड़े बड़े दुख देखे इसने ॥

कितने ही राजे महराजे।
इसको जीत बजा कर बाजे॥
मिट्टी में अब मिले हुए हैं।
खँडहर उनके किले हुए हैं॥

कृष्ण यहां थे आते जाते।
भीम यहाँ थे गदा घुमाते॥
वह भी एक समय था न्यारा।
जो है हा! कर गया किनारा॥

इस युग में ही पृथ्वीराज थे।
जो दिल्ली के महाराज थे॥
किन्तु उन्हीं के साथ विधाता!
टूटा सब दिल्ली से नाता॥

किये मुसलमानों ने हमले।
जिसमें हाय नहीं हम सँभले॥
क्योंकि बैर था आपस में अति
मरी हुई थी सब ही की मति॥

उनका भी अब गया जमाना।
हुआ 'ब्रिटिश' लोगों का आना॥
लेकिन वे भी गए कूच कर।
फिर से दिल्ली बसी उजड़ कर।

दशा देख कर यह दिल्ली की।
उसकी लोहे की किल्ली की॥
यही शब्द हैं मुख पर आते।
सब दिन नहीं बराबर जाते॥

जिनको धन बल मिला हुआ है।
जिनसे सब जग हिला हुआ है॥
उचित न है उनका इतराना।
जाने कैसा लगे जमाना॥

जो सब भाँति तथा हैं हारे।
सदा रहें वे साहस धारे॥
प्रभु माया सब की सुध लेती।
है दिल्ली यह शिक्षा देती॥

जब मैं कुछ बढ़ जाऊँगा

किसी पेड़ की डाली पकड़ कर
झट उस पर चढ़ जाऊँगा।
चिड़ियाँ चारों तरफ उड़ेंगी
देख उन्हें सुख पाऊँगा॥
चुन चुन कर सुन्दर कलियों को
माला कई बनाऊँगा।

खुद पहनूँगा और साथियों
को सादर पहनाऊँगा ॥
डंडे पर तब नहीं चढ़ूँगा
घोड़ा एक मँगाऊँगा।
उस पर चढ़ कर इस दुनिया
का पूरा पता लगाऊँगा ॥
एक बड़ी सीढ़ी बनवा कर
बादल तक पहुँचाऊँगा।
बिजली यहाँ बाँध लाऊँगा
अम्मा को दिखलाऊँगा ॥
नहीं मास्टर का डर होगा
स्वयं गुरू बन जाऊँगा।
पर न किसी को कुरसी पर चढ़
बेंत कभी दिखलाऊँगा ॥
लड़के मुझसे नहीं डरेंगे
और न उन्हें डराऊँगा।
जो तुतली बोली बोलेगा
राजा उसे बनाऊँगा ॥
तब शायद मैं खेल खिलौने
खेल नहीं सुख पाऊँगा।

खेलूँगा तो फिर लड़के का
लड़का ही रह जाऊँगा ॥
हाँ, चर्खे का चलन चला है
चरखा रोज चलाऊँगा।
मुन्नी की सब गुड़ियों को
खद्दर खासा पहनाऊँगा ॥
है यह भारतवर्ष हमारा
इसको मैं अपनाऊँगा।
इसके उड़ते तिनकों तक पर
अपनी छाप लगाऊँगा ॥
अपनी माँ का, मातृ-भूमि का
सच्चा पुत्र कहाऊँगा।
एक बार दुनिया दहलेगी
जब मैं कुछ बढ़ जाऊँगा ॥

बाल—लीला

हैं बस हिलती डुलती पुतली।
अभी बोलते बोली तुतली ॥
पर ये दोनों आँखें प्यारी।
सदा माँगतीं दुनिया सारी ॥

इनकी अजब अजीब कहानी।
चाहे पत्थर हो या पानी॥
रखते जग में सब से नाता।
कोई माता कोई भ्राता॥
कभी चोर बनते छिप जाते।
जू-जू बन कर कभी डराते॥
या कोयल बन कू! कू! गाते।
तरह तरह के वेष बनाते॥
जो लखते उस पर ललचाते।
आ जा, आ जा, उसे बुलाते॥
आता अगर न तो झल्लाते।
बड़े बड़े आँसू टपकाते॥
जिसको इतना रोकर पाते।
छिन में भूल उसी को जाते॥
किसी और हित मुँह कर गीला।
बड़ी निराली इनकी लीला॥

माता का लाल

दीन दुखी जन की पुकार पर,
जो नित कदम बढ़ाता है।

भूखा देख साथियों को निज,
जो भूखा रह जाता है॥
अन्धों को मौका पड़ने पर,
जो उँगली पकड़ाता है।
रोती आँखें देख आँख में
जिसके जल भर आता है॥
जो न कभी भय खाता है,
खड़ा क्यों न हो सम्मुख काल।
कहलाता है वही जगत में,
दयामयी माता का लाल॥

ईश्वर की माया

कल सपने में देखा मैंने,
होता एक तमाशा।
सुन कर तुमको विस्मय होगा,
उसका हाल खुलासा॥
परदा उठा पड़ा दिखलाई,
एक नाचता लोटा॥
पहले हुआ घड़े सा बढ़ वह,
पुनः मटर सा छोटा॥
निकल निकल कर उसमें से ही,
हुए हजारों लोटे।

कोई हलके भारी कोई,
पतले कोई मोटे ॥
लखते ही लखते लोटों से,
फ़र्श भर गया सारा।
पर उनसे भी ज्यादा बढ़ कर,
विस्मय बढ़ा हमारा ॥
उन लोटों से बाहर निकली
भाँति भाँति की नारी।
तरह तरह के गहने पहने
रङ्ग विरंगी सारी ॥
लोटा लोटा कह कर सब वे,
लगीं नाचने गाने।
वही बिगड़ कर लूटा लूटा,
सब को लगा सुनाने ॥
लूटा से भय हुआ चोर का,
छिपने की मन आई।
पर न एक भी पड़ा कहीं पर,
लोटा वहाँ दिखाई ॥
डर से थर थर लगीं काँपने,
नाच गान सब भूला।

तब तक आसमान से उतरा,
बन लोटों का भूला ॥
भूल रहा था उसमें सुख से,
बालक एक निराला।
हाथों में थी मुरली उसके,
उर में मोहन माला ॥
लख उसको सब का भय छूटा,
पुनः लगीं वे गाने।
वह बालक भी भूल भूल कर,
मुरली लगा बजाने ॥
सब ने उस बंशी की ध्वनि में,
अपना राग मिलाया।
मिलते मिलते मिली उसी के,
तन में सब की काया ॥
भूला भी मिट गया अचानक,
किन्तु खड़ा हो बालक।
बोला—"मैं ही हूँ इस नाटक,
का केवल संचालक ॥
हे दर्शक गण! इस नाटक को,
समझो मेरी माया ॥

इसी भाँति मुझसे ही निकला;
मुझमें जगत समाया ॥
दुख सुख तुम जो अनुभव करते,
वह सब भ्रम है मन का।
मुझसे मन का मेल मिलाओ,
तजो भरोसा तन का ॥
इतने ही में निद्रा छूटी,
और न लखने पाया।
पर जो कुछ देखा था,
उससे पूरा लाभ उठाया ॥
अब मैं हर दम खुश रहता हूँ,
दुख सुख सब सम मानूँ।
निर्भर अपने कर्म्म उसी,
प्रभु की इच्छा पर जानूँ ॥

कौन ?

सवेरे आ सूरज के साथ,
हमें मुख चूम जगाता कौन ?
शाम को आ तारों के साथ,
हमें मुख चूम सुलाता कौन ?

झूलती हरियाली के साथ,
हमें ले गोद झुलाता कौन ?
खिलौनों की लाली के साथ,
हमारा मन ललचाता कौन ?

* * * *

अजी होंगे माता के हाथ,
नहीं तो होगा ईश्वर मौन।

प्यारा पेट

कैसे मैं दुनिया में आता,
अगर न होता प्यारा पेट।
कैसे मैं कुछ खा पी पाता,
अगर न होता प्यारा पेट ॥
प्यारा पेट दुलारा पेट।
तीन लोक से न्यारा पेट ॥

तोंदों ने जब टाँग बढ़ाई,
बनी पेट के लिये कढ़ाई।
हुई पेट के लिये लड़ाई,
बड़े पेट की बड़ी बड़ाई ॥

खाओ यारो भर भर पेट।
मैंने देखा घर घर पेट॥

बने पेट के लिये पुजारी,
बने पेट के लिये जुआरी।
बने पेट के लिये भिखारी,
बड़ी पेट की महिमा भारी॥

दुनिया का राजा है पेट।
देखो जहां विराजा पेट॥

पेट सुलाता पेट जगाता,
टाइमपीस घड़ी है पेट।
पेट पढ़ाता पेट लिखाता,
अध्यापिका छड़ी है पेट

पड़े पड़े यह पालो पेट।
भैया खूब सँभालो पेट॥

पेट रुलाता पेट हँसाता,
विरह मिलन की छाया पेट।
अजी ! पेट ही परमेश्वर है,
परमेश्वर की माया पेट॥

मन्दिर और शिवाला पेट।
कभी न भरने वाला पेट॥